चीन ने बनाया दुनिया का सबसे ऊंचा पुल... पेज 5

दैनिक कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

शनिदेव प्रसन्न होकर सुखों से भर देंगे झोली... पेज 7

वर्ष 6, अंक 21 | भोपाल, शनिवार 2 अगस्त, 2025 | श्रावण शुक्ल पक्ष, नवमीं, 2082 | मूल्य 2 रुपए

भारत-अमेरिका संबंधों से आखिर ट्रंप चाहते क्या हैं?

डॉ. सुदीप शुक्ल. दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

महीनों से दिखाए जा रहे भय के बाद अमेरिका ने अंततः दुनिया के 92 देशों की आयातित वस्तुओं पर प्रस्तावित टैरिफ की सूची जारी कर ही दी। भारत पर भी 25% टैरिफ के साथ ही रूस से तेल आयात करने पर 10% पैनल्टी भी प्रस्तावित की गई है। ट्रंप का यह कदम भारत-अमेरिकी द्विपक्षीय संबंधों पर ही नहीं बल्कि वैश्विक आर्थिक समीकरणों पर भी सवालिया निशान लगा रहा है। दशकों में प्रगाढ़ हुए भारत-अमेरिका संबंधों के एवज में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भारत से जो चाहते हैं, वह संभव नहीं है। उन्हें यह समझना ही होगा कि भारत प्रथम ही भारत की नीति है।

भारत अब करवट ले चुका है। यह सिद्ध हो चुका है कि विश्व की पांच शक्तिशाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक, प्रभावी वैश्विक पहचान और तेजी से उभरता स्वा भिमानी भारत अपने राष्ट्रीय हितों की प्राथमिकता के आधार पर ही किसी देश के साथ संबंधों की दिशा तय करता है। ऐसे में वाशिंगटन को भी यह बात समझनी चाहिए कि उसके सरोकार यदि भारत के सरोकारों से मेल खाएंगे तभी द्विपक्षीय संबंधों का लाभ है अन्यथा आपदा में अवसर

तलाशने की भारतीय महारत भी किसी से छिपी नहीं है। तटस्थ भारतीय नीति एवं रूस से तेल आयात न रोक पाने की हताशा में ट्रंप भारत अमेरिकी संबंधों को दांव पर लगा रहे हैं जो अमेरिकी हितों के लिए भी अहितकर होगा।

दुनिया के देशों से आयातित माल पर टैरिफ लगाने के पीछे ट्रंप व्यापार असंतुलन को दूर करने को कारण बताते रहे हैं। भारत के संदर्भों में उनका तर्क है कि यहां आयात शुल्क ज्यादा होने के कारण अमेरिका का व्यापार घाटा बढ़ रहा है। इसके विपरीत वास्ताविकता यह है कि भारत में अमेरिकी उत्पाादों पर आयात शुल्क करीब 17% है, जो अमेरिकी औसत के मुकाबले ज्यादा है किन्तु भारतीय शुल्क विश्व व्यापार संगठन की तय की हुई सीमा के भीतर ही है जबकि अमेरिका की ओर से घोषित नए शुल्क विश्व व्यापार संगठन से की गई उसी की प्रतिबद्धता के विपरीत है।

राष्ट्रपति ट्रंप की राजनीति आक्रामक, व्यापार-हित केंद्रित और 'अमेरिका फर्स्ट' के नारों से ओत-प्रोत रही है। उनका मानना है कि टैरिफ प्रस्ताव का लक्ष्य वस्तुतः वे सभी देश हैं जो अमेरिका का व्यापार घाटे बढ़ा रहे हैं। अमेरिका के लिए भारत हीरे, आभूषण, फार्मा, स्टील, टेक्सटाइल्स और आईटी सेवाओं का बड़ा निर्यातक है। रूस से सस्ता कच्चा तेल खरीदने पर भारत को 10% पैनल्टी की धमकी ट्रंप की उस वैश्विक वर्चस्ववादी मानसिकता को दर्शाती है, जो यह मानती है कि हर निर्णय वाशिंगटन की स्वीकृति से ही लिया जाना चाहिए।

भारत-अमेरिकी संबंध बीते एक दशक में रणनीतिक, रक्षा, तकनीकी और आर्थिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति कर चुके हैं। इसके बाद भी ट्रंप की टैरिफ नीति और रूसी तेल आयात पर आपत्ति द्विपक्षीय विश्वास को गहरा आघात पहुँचा सकती है। भारत की ऊर्जा सुरक्षा को लेकर किया गया निर्णय राष्ट्रीय हितों का प्रश्न है और यही बात ट्रंप को खटक रही है।

हाल के वर्षों में भारत-अमेरिका के बीच रणनीतिक साझेदारी मजबूत हुई है। क्वाड, आईसीईटी, रक्षा उपकरणों का आयात, संयुक्त सैन्य अभ्यास और सेमी-कंडक्टर निर्माण में सहयोग इसकी मिसाल हैं। प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका नीति और पूर्ववर्ती राष्ट्रपति जो बाइडन की भारत नीति अपेक्षाकृत संतुलित रही है। ऐसे में ट्रंप की टैरिफ-संबंधी धमकियां दोनों देशों की प्रगति को झटका दे सकती हैं।

टैरिफ वॉर की इस आत्मतघाती नीति का सबसे बड़ा असर अमेरिकी उपभोक्ताओं पर पड़ेगा। आयातित वस्तुओं के महंगे होने से महंगाई बढ़ने, उत्पादन लागत में वृद्धि होने और अमेरिकी कंपनियों की आपूर्ति श्रृंखला के असंतुलन की आशंका है। चीन के साथ पहले की टैरिफ लड़ाई इसका प्रमाण है, जिसमें अमेरिका को अपेक्षित लाभ नहीं मिला। भारत के लिए टैरिफ संघर्ष चुनौती तो है किंतु एक अवसर भी है। अमेरिका पर अत्यधिक निर्भरता को कम कर भारत नई बाजार रणनीतियाँ बना सकता है जैसे अफ्रीका, मिडिल ईस्ट, आसियान और लैटिन अमेरिकी देशों के साथ व्यापारिक गठबंधन के अवसर खुले हुए हैं। साथ ही भारत की तेज़ विकास दर (7% से अधिक) और वैश्विक आर्थिक स्थिति देश के पक्ष में है।

डोनाल्ड ट्रंप ने भारत को 'डेड इकॉनामी' तक कह दिया, जो वस्तुतः एक राजनीतिक हताशा का प्रतीक है। भारत की रूस से तेल आयात नीति, अमेरिका की एकतरफा अपेक्षाओं की बजाय राष्ट्रीय हितों पर ध्यान और अपनी स्वतंत्र विदेश नीति ट्रंप की 'चौधराहट' को चुनौती देते हैं। इस सबके बावजूद उन्हें यह समझना होगा कि भारत अब वह नहीं जो केवल सहायता पर निर्भर हो बल्कि यह 21वीं सदी का भारत है, जो वैश्विक विकास के मंच पर नेतृत्व कर रहा है। भारत आज ग्लोबल साउथ का सबसे मुखर प्रतिनिधि है। भारत परमाणु शक्ति संपन्न लोकतांत्रिक देश है, तकनीकी रूप से सक्षम है और वैश्विक मंचों पर शांतिपूर्ण कूटनीति का पक्षधर है। जी-20 अध्यक्षता, कोविड वैक्सीन मैत्री, अंतरिक्ष तकनीक, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर आदि भारत की नई भूमिका के संकेत हैं। ऐसे में अमेरिका का भारत से संबंध बिगाड़ना उसके दीर्घकालिक हितों के प्रतिकूल है।

यदि ट्रंप अपनी वर्तमान घोषणाओं पर अडिग रहते हैं, तो भारत-अमेरिका संबंधों में रणनीतिक स्थिरता को धक्का पहुँच सकता है। हालांकि भारत की बहुध्रुवीय विदेश नीति देश को वैकल्पिक मार्गों की तलाश में सक्षम बनाती है। अमेरिका को भी दीर्घकालिक लाभ के लिए भारत के साथ सम्मानजनक और संतुलित संबंध बनाए रखने ही होंगे। डोनाल्ड ट्रंप को यह समझना होगा कि भारत केवल एक 'नया बाज़ार' नहीं, बल्कि भविष्य की आर्थिक महाशक्ति है। आज के वैश्विक परिदृश्य में भारत से संबंध बिगाड़ना अमेरिका की रणनीतिक चूक होगी। 'राष्ट्रहित सर्वोपरि' भारत की स्पष्ट विदेश नीति है और यही नीति आज देश को सुदृढ़ बना रही है। अब ट्रंप को यह निर्णय लेना हैः वह भारत को साझेदार मानेंगे या प्रतिद्वंद्वी लेकिन इतिहास केवल उसी को याद रखेगा जो सहयोग और सम्मान के मार्ग पर चला।

-(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

अमेरिका से बेहतर संबंधों की बात

रूस संग टाइम-टेस्टेड पार्टनरशिप वाला साथ, यूएस को जवाब, कहा- बेहतर विकल्प से ही खरीदेंगे तेल

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

ट्रंप द्वारा रूस के साथ भारत की नज़दीकियों की आलोचना करने के बारे में पूछे जाने पर, विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि अन्य देशों के साथ नई दिल्ली के द्विपक्षीय संबंध अपनी अपनी योग्यता पर आधारित हैं और इन्हें किसी तीसरे देश के नज़रिए से नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि रूस के साथ भारत की साझेदारी "स्थिर और समय-परीक्षित" रही है। जायसवाल से उन रिपोर्टों के बारे में भी पूछा गया कि कुछ भारतीय कंपनियों ने रूसी तेल की ख़रीद बंद कर दी है, जिस पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि केंद्र सरकार को ऐसी किसी विशिष्ट जानकारी की जानकारी नहीं है। आप ऊर्जा स्रोत आवश्यकताओं के प्रति हमारे व्यापक दृष्टिकोण से अवगत हैं, हम बाज़ार में उपलब्ध चीज़ों और मौजूदा वैश्विक स्थिति पर नज़र रखते हैं। हमें किसी विशिष्ट जानकारी की जानकारी नहीं है।

ट्रंप ने कहा कि मुझे इसकी परवाह नहीं कि भारत रूस के साथ क्या करता है। मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, वे अपनी मृत अर्थव्यवस्थाओं को मिलकर नीचे गिरा सकते हैं। उन्होंने भारत की व्यापारिक प्रथाओं की आलोचना करते हुए कहा, "हमने भारत के साथ बहुत कम व्यापार किया है। उनके टैरिफ़ बहुत ज़्यादा हैं, दुनिया में सबसे ज़्यादा में से एक। ट्रंप ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा है कि भारत हमारा दोस्त है, लेकिन उनके ऊंचे टैरिफ और रूस से सैन्य उपकरण और ऊर्जा खरीद ने उनकी नीतियों को लेकर चिंता है। खासकर तब जब दुनिया यूक्रेन में रूस की हिंसा रोकना चाहती है। इस आधार पर उन्होंने भारत पर 25 प्रतिशत टैरिफ और एक एक्स्ट्रा पैनल्टी लगाने का ऐलान किया है। ट्रंप ने इस कदम को अस्वीकार्य गैर-टैरिफ बाधाओं को सुधारने की दिशा में उठाया गया बताया है। जिस तरह से ट्रंप कदम उठा रहे हैं भारत और अमेरिका के बीच 87 अरब डॉलर का निर्यात व्यापार दांव पर है। जहां अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। यह टैरिफ उन कई प्रमुख उद्योगों की कंपटीशन को चुनौती देता है जो पहले से ही वैश्विक मंदी का सामना कर रहे हैं। ट्रंप ने इस टैरिफ को ग्लोबल सप्लाई चेन में अमेरिका की ताकत के रूप में पेश किया।

लेफ्टिनेंट जनरल पुष्पेन्द्र सिंह बने उप सेनाध्यक्ष

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

लेफ्टिनेंट जनरल पुष्पेन्द्र सिंह ने भारतीय थल सेना के उप सेनाध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। पैरा रेजिमेंट (स्पेशल फोर्सेस) की चौथी बटालियन से संबद्ध इस वरिष्ठ अधिकारी को दिसंबर 1987 में कमीशन प्राप्त हुआ था। उन्होंने ला मार्टिनियर कॉलेज,

लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय और भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून से शिक्षा प्राप्त की है। एक युवा अधिकारी के रूप में, सेकेंड लेफ्टिनेंट पुष्पेन्द्र सिंह ने भारतीय शांति सेना के तहत श्रीलंका में चलाए जा रहे अभियानों के दौरान अपनी बटालियन को जॉइन किया था। 4 पैरा अक्टूबर 1987 में श्रीलंका में तैनात की गई थी, जहां उसने जाफना और बाद में किलिनोच्चि में महत्त्वपूर्ण अभियानों में भाग लिया। 22 जुलाई 1989 को सेकेंड लेफ्टिनेंट पुष्पेन्द्र सिंह ईरानामाडु से किलिनोच्चि की ओर जा रही एक 13-सदस्यीय क्विक रिएक्शन टीम का नेतृत्व कर रहे थे, जब उनकी टुकड़ी पर घात लगाकर हमला किया गया। अत्यंत विषम परिस्थितियों में उन्होंने साहसपूर्ण नेतृत्व करते हुए जवाबी कार्रवाई की, जिसमें चार एलटीटीई आतंकवादी मारे गए और कई अन्य घायल हुए। इस भीषण संघर्ष में उनकी टीम के पांच वीर सैनिकों ने वीरगति प्राप्त की, जबकि सेकेंड लेफ्टिनेंट पुष्पेन्द्र सिंह स्वयं तथा दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। उप सेनाध्यक्ष का कार्यभार संभालने के अवसर पर, लेफ्टिनेंट जनरल पुष्पेन्द्र सिंह ने उन पांच शहीदों के परिजनों और वीर नारियों को इस पावन क्षण का साक्षी बनने हेतु आमंत्रित किया।

ऑपरेशन अखल... जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में आतंकियों का एनकाउंटर

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी कुलगाम

जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले के अखल इलाके में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ जारी है। भारतीय सेना ने ' ऑपरेशन अखल ' के तहत आतंक विरोधी कार्रवाई को अंजाम देते हुए अब तक एक आतंकवादी को मार गिराया है। इस ऑपरेशन की पुष्टि चिनार कॉर्प्स ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर की है। उन्होंने जानकारी दी कि ऑपरेशन अभी भी जारी है और इलाके में तलाशी अभियान तेज कर दिया गया है। इस संयुक्त अभियान में भारतीय सेना, जम्मू-कश्मीर पुलिस की विशेष अभियान समूह (SOG), केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF) समेत अन्य सुरक्षाबल शामिल हैं। जानकारी के मुताबिक, आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना के बाद इलाके को घेरकर सर्च ऑपरेशन शुरू किया गया था। बता दें अकाल वन क्षेत्र में शुक्रवार को आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ शुरू हुई थी। सेना ने आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद इलाके में घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया था। तलाशी अभियान के दौरान छिपे हुए आतंकवादियों से संपर्क स्थापित किया गया। फिलहाल सेना ने पूरे इलाके को घेर लिया है ताकि आतंकियों को भागने का मौका ना मिल सके।सूत्रों की मानें तो दो से तीन आतंकवादियों की मौजूदगी हो सकती है। शक है कि ये विदेशी आतंकी हैं। सुरक्षा बलों की टीम मिलकर आतंकवादियों से लड़ रही है। अभी तक एक आतंकवादी मारे जाने की खबर हैं। सेना का ऑपरेशन अभी जारी है। उधर, कश्मीर के अनंतनाग जिले में सुरक्षाबलों ने आतंकियों के तीन मददगारों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से हथियारों को बरामद किया गया है।

समाचार संपादक की कलम से
–राहुल कौशिक

भारत की मानसिकता पर कड़वा सचः आत्मचिंतन की ज़रूरत

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जापान कभी किसी का गुलाम नहीं रहा। अमेरिका ने उस पर परमाणु बम गिराए, पर उसने हार नहीं मानी। वह फिर से खड़ा हुआ और आज तक अमेरिका से एक तिनका भी नहीं लिया। जापान की यह आत्मसम्मान की भावना उसे दुनिया में अलग बनाती है। एक भारतीय सज्जन लगभग एक साल जापान में रहे। वहां कई लोगों से दोस्ती हुई, पर एक बात उन्हें हमेशा खटकती रही। इतने दिनों में भी किसी जापानी मित्र ने उन्हें कभी अपने घर पर चाय के लिए नहीं बुलाया। आखिरकार उन्होंने अपने एक करीबी जापानी मित्र से इसका कारण पूछा।

थोड़ी झिझक के बाद जो उत्तर मिला, उसने भारतीय को चुप कर दिया। जापानी मित्र ने कहा – "हम भारतीय इतिहास पढ़ते हैं, पर प्रेरणा लेने के लिए नहीं, शिक्षा लेने के लिए। तुम्हारे देश पर 200 साल अंग्रेज़ों का शासन रहा। भारत में उस समय 32 करोड़ लोग थे और अंग्रेज़ मात्र 10,000। तो बताओ, उन 32 करोड़ लोगों को किसने गुलाम बनाया? गोलियां किसने चलाईं? अपने ही लोगों ने, है ना?"

फिर उसने सवाल किया –

"जब जनरल डायर ने जलियांवाला बाग़ में 'फायर' कहा, तो किसने 1300 निहत्थे लोगों पर गोलियां चलाईं? अंग्रेज़ों ने नहीं, तुम्हारे ही अपने लोगों ने। किसी एक सिपाही ने भी क्यों नहीं जनरल डायर पर बंदूक तान दी? इतनी गहरी गुलामी क्यों?"

जापानी मित्र ने मुघल शासन का भी जिक्र किया। "कितने मुघल भारत आए थे? कितने साल राज किया? पर गुलाम बनाए गए तुम्हारे अपने लोग। धर्म परिवर्तन भी तुम्हारे अपने भाइयों ने किया। लालच और डर में अपने ही लोगों को सताने लगे। कुछ पैसे के लिए अपने ही भाईयों को बेच दिया।"

उसने कहा, "तुम्हारे देश में चंद्रशेखर आज़ाद जैसे लोग आज़ादी के लिए जान देते रहे, पर लालच में अपने ही लोगों ने उन्हें पकड़वाया। भगत सिंह जैसे वीर को बचाने कोई नहीं आया। गांधीजी भूख हड़ताल कर मौत तक जाते थे, पर भगत सिंह को बचाने के लिए दो दिन का उपवास भी नहीं किया।"

जापानी मित्र ने कहा–

"यही कारण है कि हम भारतीयों से दूरी रखते हैं। तुम्हारे लोग आज भी मुफ्त की चीज़ देखकर वोट देते हैं। अपना फायदा पहले, देश बाद में। तुम्हारे लिए 'मैं और मेरा परिवार' पहले है, समाज और देश बाद में। यही वजह है कि भारत आज भी अपनी असली ताकत नहीं दिखा पा रहा।"

यह बातें कड़वी हैं, पर सच हैं। यह किसी और की आलोचना नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का आईना है। अगर हम चाहते हैं कि भारत मजबूत हो, तो सबसे पहले हमें अपनी सोच बदलनी होगी। देश पहले, हम बाद में – यही भारत को वास्तविक आज़ादी दिला सकता है।

फिटब्लिस बाय श्रुति कपूर, एक साल बेमिसाल... सात दिन चलेगा कार्निवाल

▪ अभिनेत्री जेक्लीन फर्नांडीज आएंगी कार्निवाल में ▪ जुंबा, न्यूट्रिनिस्ट, बॉलीवुड फिटनेस कोच आयेंगे ▪ पहली सालगिरह पर अनेक आयोजन ▪ सुचेता पाल, शिवोहम, वृंदा भट्ट, पूजा मखीजा यास्मीन जैसे सेलिब्रिटी ट्रेनर आयेंगे

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सभी अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित राजधानी का फिटब्लिस बॉय श्रुति कपूर जिम सफलता का पहला साल सेलीब्रेट करने जा रहा है। 2 अगस्त से 7 अगस्त तक रानी कमलापति रेलवे स्टेशन के सामने स्थित इस जिम में फिटब्लिस कार्निवाल का आयोजन किया जा रहा है जिसमें बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री जेक्लीन फर्नांडीज सहित भारत के सर्वश्रेष्ठ सेलिब्रिटीज रणवीर सिंह, शाहरुख खान दीपिका पादुकोण कैटरीना कैफ अमिताभ बच्चन आदि के पर्सनल फिटनेस ट्रेनर और माइंड कोच भी शिरकत करेंगे।

शुक्रवार को फिटब्लिस में आयोजित एक पत्रकार वार्ता में ग्रुप की चेयर पर्सन डॉक्टर साधना कपूर और फिट ब्लिस की मैनेजिंग डायरेक्टर डाक्टर श्रुति कपूर ने यह जानकारी देते हुए कहा कि उनका पहला उद्देश्य भोपाल के लोगों को फिट रखने के साथ साथ उनके स्वास्थ्य के लिए जागरूक करना है। डॉक्टर श्रुति ने कहा कि उनका मूल मंत्र लक्जरी मीट्स वेलनेस, पैशन मीट्स फिटनेस, है। डॉ श्रुति ने सात दिन के कार्निवाल और उसमें आने वाले सेलिब्रिटीज सुचिता पाल, पूजा मखीजा,

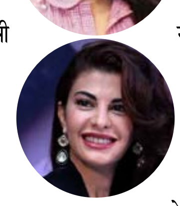

वृंदा भट्ट, शिवोहम, अभिनेत्री जेक्लीन फर्नांडीज, यास्मीन कराचीवाला के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि भोपाल में एक छत के नीचे अत्याधुनिक और विश्वस्तरीय सुविधाओं का लाभ लेकर अपने आपको कैसे फिट रखना है यह भोपाल वासियों के लिए किसी सौगात से कम नहीं है।

चेयर पर्सन डॉक्टर साधना कपूर ने बताया कि फिटब्लिस हर उम्र के लोगों के लिए है, यहां 10 साल से 80 साल तक के लोग अपने आपको फिट रखने का संकल्प लेकर आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि यहां न सिर्फ फिटनेस बल्कि घुटनों या स्पाइन की इंजुरी ठीक करने में भी पिलाटे का उपयोग किया जा रहा है। यहां ट्रेनिंग लेने वाले लोगों की डाइट और न्यूट्रीशन का ख्याल रखने के लिए भी हमारे साथ सर्वश्रेष्ठ डाइटीशियन भी हैं।

आज थोड़ी चीटिंग चलेगी.......

फिटब्लिस की मैनेजिंग डायरेक्टर डाक्टर श्रुति कपूर ने मीडिया से आई महिला पत्रकारों के साथ केक काटकर एक साल के जश्न की शुरुआत की। उन्होंने अपने वेट लॉस का खुलासा करते हुए बताया कि एक समय में 120 किलो की हो गई थी और हवाई यात्रा में मुझे सीट बेल्ट छोटा पड़ जाता था लेकिन कुशल ट्रेनर और अपने जुनून से मैने आधा वजन घटा लिया है और अभी और मेहनत कर रही हूँ। उन्होंने मजाकिया लहजे में यह भी कहा कि आज मैं केक जरूर खाऊंगी भले ही थोड़ा वजन बढ़ जाए....ये चीटिंग सक्सेस के लिए है।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा मुंबई एवं लघुकथा शोध केन्द्र समिति, भोपाल के मध्य रचनात्मक सहयोग की पहल

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जब भाषाओं को लेकर समाज में टकराव हो तब उनके बीच समन्वय और सेतु का कार्य वहां के साहित्यकार कर सकते हैं , कुछ ऐसी ही पहल हुई है हिन्दी और मराठी को लेकर , । हिन्दी प्रचार-प्रसार की प्रतिष्ठित संस्था हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुंबई में एक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक बैठक सम्पन्न हुई। यह बैठक सभा की सक्रिय कार्यकर्ता श्रीमती ममता माली की पहल पर आयोजित की गई। इस अवसर पर हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के परियोजना समन्वयक श्री राकेश कुमार त्रिपाठी एवं विशेष कार्य अधिकारी डॉ. रीता कुमार के आमंत्रण पर लघुकथा शोध केन्द्र समिति, भोपाल की निदेशक श्रीमती कान्ता रॉय की गरिमामयी उपस्थिति रही। बैठक के दौरान दोनों संस्थाओं के मध्य साहित्यिक और शोधात्मक समन्वय स्थापित करने को लेकर विविध रचनात्मक बिंदुओं पर विचार-विमर्श हुआ। विशेष रूप से लघुकथा विधा पर संयुक्त रूप से कार्यशालाओं के आयोजन तथा एम.ओ.यू. (समझौता ज्ञापन) के माध्यम से दीर्घकालिक सहयोग की संभावनाओं पर सकारात्मक चर्चा की गई। इस अवसर पर श्रीमती कान्ता रॉय ने लघुकथा शोध केन्द्र समिति की वार्षिक स्मारिका 'उड़ान' भेंट कर अपनी संस्था की रचनात्मक उपलब्धियों से अवगत कराया। बदले में डॉ. रीता कुमार एवं श्री राकेश त्रिपाठी ने हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की प्रतिष्ठित पत्रिका 'हिन्दुस्तानी जबान' की प्रति भेंट की। बैठक के उपरांत श्रीमती ममता माली ने अतिथियों को हिन्दुस्तानी प्रचार सभा द्वारा संचालित पुस्तकालय का भ्रमण कराया। इस अवसर पर ग्रंथपाल द्वारा यह प्रस्ताव रखा गया कि लघुकथा शोध केन्द्र समिति, भोपाल की प्रकाशित लघुकथा-पुस्तकों को पुस्तकालय में सम्मिलित किया जाए, जिससे पाठकों को समकालीन लघुकथा साहित्य तक सहज पहुँच प्राप्त हो सके। यह रचनात्मक पहल हिन्दी लघुकथा के क्षेत्र में दोनों संस्थानों की सहभागिता को एक नए आयाम तक ले जाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी।

शासकीय हाई स्कूल अगरिया कलां वि. खंड गैरतगंज में वृक्षारोपण एवं निः शुल्क साइकिलों का वितरण किया गया

दैनिक कारखाने का सफर। गैरतगंज

शासकीय हाई स्कूल अगरिया कलां विकासखंड गैरतगंज ग्राम पंचायत अगरिया कलां के सरपंच द्वारा शासकीय हाई स्कूल अगरिया कला मेंजन प्रतिनिधि सर्जन सिंह गुर्जर एवं दिनेश कुमार नामदेव एवं ग्रामवासी एवं पालक गण की उपस्थिति में संस्था के प्रभारी प्राचार्या एवं समस्त स्टाफ की उपस्थिति में शासन की निःशुल्क साइकिल योजना के तहत विकासखंड गैरतगंज से प्राप्त पात्र छात्र-छात्राओं को साइकिलों का वितरण किया गया एवं एक पेड़ मां के नाम से छात्र छात्राओं के मोबाइल एप पर उनसे पौधा लगवाए गए एवं सरपंच महोदय एवं जन प्रतिनिधियो के द्वारा भी पौधारोपण किया गया।

पटाडिया हायर सेकंडरी स्कूल का निरीक्षण करने के लिए पहुंचे बीईओ ने ली बच्चों की क्लास

सपनों को साकार करने के लिए हौसले मजबूत रखना चाहिए : विरमाल

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

सारंगपुर ब्लाक शिक्षा अधिकारी सुरेश विरमाल ने ब्लाक के पटाडिया हायर सेकंडरी स्कूल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्कूल के बालक बालिकाओं की क्लास लेकर प्रोत्साहित किया और प्रतिस्पर्धा का भाव भरते हुए विकासखंड शिक्षा अधिकारी ने कहा कि हर एक बच्चे को बडा सपना देखना चाहिए, सपनों को साकार करने के लिए हौसले मजबूत रखना चाहिए। मंजिलें उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उडान होती है। बीईओ ने कहा कि बच्चों को दिन रात मेहनत करनी पडती है तब परीक्षा परिणाम बेहतर बनता है। आपके अंदर प्रतिस्पर्धा की भावना हमेशा बनी रहना चाहिए, तब जाकर आप अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं। स्कूल में बच्चों की भरपूर उपस्थिति देखकर बीईओ ने प्राचार्य दिप्ती सोनी एवं स्टाफ की सराहना की गई। इस अवसर पर संपूर्ण विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

यह दिए निर्देश : निरीक्षण के दौरान बीईओ विरमाल ने कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षणिक गुणवत्ता, नियमितता एवं उपस्थिति की गहन समीक्षा की। विद्यालय के प्राचार्य सोनी द्वारा विद्यालय में संचालित गतिविधियों, उपलब्धियों एवं चुनौतियों की जानकारी दी गई। बीईओ ने निरीक्षण के दौरान विद्यालय के प्रयासों की सराहना करते हुए शैक्षणिक गुणवत्ता को और बेहतर बनाने हेतु प्रेरित किया एवं समस्याओं के निराकरण हेतु सकारात्मक आश्वासन दिया।

भोपाल में 3 अगस्त को अलबेला झूलन महोत्सव, झूले पर विराजेंगे ठाकुर जी, होगी भजनों की प्रस्तुति

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सावन की रिमझिम फुहारों के बीच भोपाल में इस बार भक्तिरस की बयार बहेगी। 'श्री श्याम अलबेला झूलन महोत्सव' का आयोजन 3 अगस्त को किया जाएगा। कार्यक्रम स्वागत गार्डन, हलालपुरा, लालघाटी स्थित परिसर में सुबह 11 बजे से आयोजित होगा। श्री श्याम ताली संकीर्तन परिवार भोपाल के इस आयोजन में रास, राग और रंगों से सजे झूले पर ठाकुर जी को विराजमान कर भक्तजन प्रेम, समर्पण और भक्ति की डोर से उन्हें झुलाएंगे। भजन कलाकार नागपुर के गीतांश डालमिया और दिल्ली सोनम समता अपने भजनों के माध्यम से श्रद्धालुओं को भक्ति रस में डुबो देंगे। कार्यक्रम के दौरान

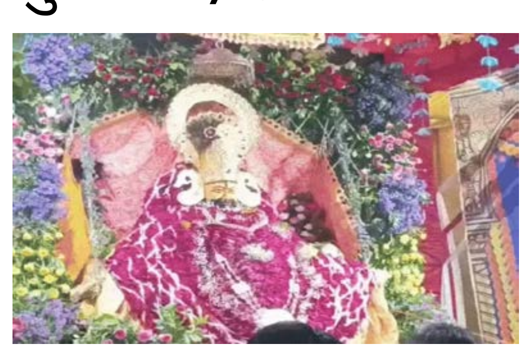

श्रद्धालुओं के लिए दोपहर 2 बजे से प्रभु भोग प्रसाद की 'श्याम रसोई' का भी आयोजन किया है। आयोजकों के अनुसार यह न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि एक भावात्मक मिलन है, जहां श्याम नाम की मस्ती और भक्ति की गंगा बहेगी। 'श्याम सेवक म्यूजिकल ग्रुप' और 'रिंकू रिदम इवेंट्स' की विशेष प्रस्तुति भक्ति संगीत की प्रस्तुति के लिए 'श्याम सेवक म्यूजिकल ग्रुप' और 'रिंकू रिदम इवेंट्स' विशेष रूप से मंच पर रहेंगे। संगीत की हर धुन और शबद में ठाकुर श्री श्याम का भाव प्रतिध्वनित होगा। आयोजकों का कहना है कि यह महोत्सव केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि श्याम भक्ति में सराबोर होने का अवसर है। 'जहां श्याम हैं, वहां दूरी नहीं' इस भाव के साथ हर भक्त इस आयोजन में सहभागी बनें।

सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई शुरू होते ही कहा-जिस बेंच में मैं हूं, उसमें इस मामले की सुनवाई न हो

जस्टिस माहेश्वरी की बेंच नहीं सुनेगी बड़ोदिया-नोनागिर केस

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सागर जिले के खुरई विधानसभा क्षेत्र के बहुचर्चित दलित हत्याकांड मामले से सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस जेके माहेश्वरी ने खुद को अलग कर लिया है। शुक्रवार को जैसे ही इस मामले की सुनवाई शुरू हुई। जस्टिस माहेश्वरी ने कहा- मैं इस मामले को नहीं सुनना चाहता। इस केस को उस बैंच में सुना जाए, जिस बेंच में मैं नहीं हूं। इस साल के शुरुआत में 20 जनवरी को बड़ोदिया नोनागिर का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा था। जस्टिस जेके माहेश्वरी और विजय बिश्नोई की बैंच इस केस की शुरुआत से सुनवाई कर रहे थे। इस बैंच ने ही राज्य सरकार और सीबीआई को इस मामले में नोटिस जारी किए थे। अचानक जस्टिस माहेश्वरी जी का इस केस से खुद को अलग करना आश्चर्यजनक है, क्योंकि, वो सुप्रीम कोर्ट में शुरू से सुन रहे थे। कोई वजह साफ नहीं हैं। अगर वो खुद को अलग कर रहे हैं तो कोई न कोई गंभीर कारण जरूर होगा। दरअसल, जनवरी 2019 में सागर में खुरई देहात थाना क्षेत्र के बरोदिया नौनागिर गांव में रहने वाले रघुवीर अहिरवार की इकलौती बेटी अंजना के साथ कुछ दबंगों ने मारपीट की थी। परिवार का दावा है कि उसके साथ छेड़छाड़ भी हुई थी लेकिन पुलिस ने एफआईआर में इसका जिक्र नहीं किया।

इसी मामले में समझौता करने का दबाव बनाए जाने पर 24 अगस्त 2023 को रघुवीर यादव के सबसे छोटे बेटे 18 साल के नितिन उर्फ लालू की बाजार में पीट-पीट कर हत्या कर दी गई। हत्या के बाद दबंगों ने रघुवीर के घर जाकर तोड़फोड़ भी की थी। नितिन की हत्या और तोड़फोड़ मामले में उसकी मां बड़ी बहू, बहन अंजना और गांव के रिश्ते में चाचा राजेंद्र अहिरवार मुख्य गवाह थे। दबंगों ने राजेंद्र अहिरवार पर गवाही बदलने का दबाव बनाया। जब वे नहीं माने तो 9 महीने बाद राजेंद्र की भी कुल्हाड़ी और लाठी-डंडे से हमला कर हत्या कर दी गई। राजेंद्र की हत्या के बाद अंजना उनकी लाश के साथ गांव लौट रही थी। गांव से कुछ दूरी पर खुरई तिराहे पर वह संदिग्ध हालत में चलती एंबुलेंस से गिर गई। पुलिस का दावा था कि वह वैन से कूद गई थी। इससे सिर में चोट आई और कुछ देर बाद उसकी मौत हो गई। सुप्रीम कोर्ट में अंजना की मां बड़ी बहू की तरफ से दायर याचिका में खुरई से बीजेपी विधायक व पूर्व गृह मंत्री भूपेंद्र सिंह और उनके करीबियों पर हत्या का आरोप लगाया गया है। कहा गया है कि उनके राजनीतिक प्रभाव के कारण निष्पक्ष जांच संभव नहीं है। जांच को बाधित करने के लिए प्रत्यक्षदर्शियों की हत्या भी आपराधिक षड्यंत्र का परिणाम थी। इसमें गांव के दबंग भी शामिल थे।

अखिल विश्व गायत्री परिवार की दिव्य ज्योति कलश यात्रा प्रारंभ हुई

भोपाल शहर की अधिकांश कॉलोनी एवं जिले के निकटस्थ ग्रामों तक पहुंचेगी यात्रा

एक अगस्त से शुरू होकर 31 अगस्त तक करेगी भोपाल जिले में भ्रमण

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की आध्यात्मिक साधना, माता भगवती देवी के प्राकट्य एवं शांतिकुंज हरिद्वार में स्थापित अखंड दीप की स्थापना के 100 वर्ष 2026 में पूर्ण हो रहे हैं। शताब्दी वर्ष की पूर्णता पर गायत्री परिवार द्वारा विश्व स्तरीय शताब्दी समारोह हरिद्वार में अगले वर्ष 2026 में आयोजित किया जाएगा, जिसमें समूचे विश्व से गायत्री परिवार के परिजन जुटें ऐसा दिव्य सन्देश शांतिकुंज द्वारा दिया गया है। इससे पूर्व दिव्य ज्योति कलश यात्रा विश्व के कई देशों में निकाली जा रही है। इसी क्रम. में यह यात्रा भोपाल पहुंची।

इस संदर्भ में शुक्रवार को गायत्री परिवार के प्रदेश समन्वयक राजेश पटेल द्वारा गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में आयोजित प्रेस वार्ता में विस्तार से जानकारी दी गई। श्री पटेल ने बताया कि, इस आध्यात्मिक त्रिवेणी की ऊर्जा को दिव्य कलश में संजोया गया है और युगतीर्थ शांति कुंज हरिद्वार से प्रारम्भ हुई दिव्य ज्योति कलश यात्रा भारत के ग्रामों शहरों के साथ विश्व के कई हिस्सों में जा रही है। भोपाल में यह दिव्य ज्योति कलश यात्रा 1 अगस्त से शुरू होकर 31 अगस्त तक चलेगी। इस दौरान भोपाल शहर की अधिकांश कॉलोनीयों एवं जिले के निकटस्थ ग्रामों तक यह यात्रा पहुंचेगी। इस यात्रा की शुरुआत आज देवपूजन व वेद मन्त्रोंचार के साथ गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में संपन्न हुई, इसके बाद यात्रा गाजे बाजे के साथ अबेदुल्लागंज के लिये रवाना हुई। वहीं विश्व स्तर पर बात करें तो ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, यूके, यूरोप सहित समूचे विश्व में भारतीय संस्कृति की अलख जगाने वाली इस दिव्य ज्योति कलश यात्रा का भव्य स्वागत किया गया है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के दिखाए सन्मार्ग पर चलने के लिए पूरे विश्व में लोगों ने इससे प्रेरणा ली है। इस दिव्य ज्योति कलश यात्रा में पूज्य गुरुदेव की दिव्य साधना की शक्ति माता भगवती की अनुकंपा, ऋषियों का आशीष व भारत के समस्त तीर्थ की दिव्य ऊर्जा है। शांतिकुंज हरिद्वार से शुरू हुई आध्यात्मिक प्रवाह की यह अलौकिक यात्रा को दुनिया तक आगे सतयुग आने का सन्देश पंहुचा रही है।

वहीं उपजोन समन्वयक हजारी व सह समन्वयक अशोक सक्सेना ने कहा कि इस वक्त युग एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पूरे विश्व में विभीषिका चरम पर है। यह समय विध्वंस और नवसृजन का है। इससे कठिन परिस्थिति पहले कभी देखी नहीं गई। युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने इस भीषण काल के बाद पूरी दुनिया में सतयुग का संचार होने वाला समय बताया है,और इस बदलाव के आध्यात्मिक प्रकाश का केंद्र शांति को हरिद्वार को बताया है।

आचार्य जी ने कहा है कि 2026 के बाद से परिस्थितियों का बनना शुरू होगा और आगे भारत विश्व गुरु के रूप में पुनः गौरवान्वित होगा।

उन्होंने कहा कि यह दिव्य ज्योति कलश यात्रा पूरे विश्व को सुरक्षित, संरक्षित एवं नवसृजन की तरफ ले जाने के सन्देश के साथ जनमानस में नये विश्वास संचार का महत्वपूर्ण कार्य करेगी।

गोस्वामीतुलसी दास जी ने समाज को कठिन समय में दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

'गोस्वामी तुलसी दास रचित राम चरित मानस एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं है बल्कि यह हमारे समाज और राष्ट्र को जीवन जीने और दिशा दिखाने का महत्वपूर्ण कार्य सदियों से कर रहा है | ' यह उद्गार हैं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.रंजना शर्मा के जो अयोध्या नगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में आयोजित तुलसी जयंती के अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में बोल रही थी ,इस अवसर उन्होंने विस्तार से रामचरित मानस के मुख्य चरित्रों और घटनाओं का वर्णन करते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य से उन्हें जोड़ा | इस अवसर पर आमंत्रित वक्ता के रूप में बोलते हुए साहित्यकार घनश्याम मैथिल अमृत ने कहा कि -' विद्यार्थियों को समय निकाल कर नियमित रूप से रामचरित मानस का अर्थ सहित वाचन करना चाहिए यह उनके धार्मिक ,आर्थिक,नैतिक और सामाजिक विकास के लिए बहुत आवश्यक है |

'इस आयोजन के आरम्भ में स्वागत वक्तव्य कार्यक्रम संयोजक श्री सुभाष दुबे ने देते हुए विस्तार से कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला, | कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र छात्राओं द्वारा रामायण के विविध प्रसंगों पर जीवंत नाटकों का प्रभावी मंचन किया गया | इस अवसर पर विद्यार्थियों ने हनुमान चालीसा का सामूहिक वाचन भी किया | कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले भैया बहिनों को पुरस्कृत भी किया गया | आयोजन में विद्यालय परिवार के शिक्षक शिक्षिका सहित संचालन मंडल के सदस्य भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे |

भेल पिपलानी रामलीला मैदान पर कर्मचारी भविष्य पेंशन EPS 95 HIGHER पेंशन कमिटी की महत्तवपूर्ण बैठक संपन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भेल पिपलानी रामलीला मैदान पर कर्मचारी भविष्य पेंशन EPS 95 Higher पेंशन कमिटी की महत्तवपूर्ण बैठक संपन्न हुई। बैठक को चन्द्रशेखर परसाई राष्ट्रीय उप महासचिव ईपीएफ 95 एस एन डागा पूर्व ED भेल, महेश मालवीय राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, JP gour राष्ट्रीय सचिव विशेष आमंत्रित RS ठाकुर अध्यक्ष KTU Unionभेल, अशोक शर्मा राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य आदि ने संबोधित किया। बैठक में प्रमुख मांग 1.9 .2014 केपूर्व एवं 1.9.2014 के बाद भेल से सेवानिवृत्त साथियो को higher pension दी जाने की मांग की गई।. बैठक का संचालन महेश मालवीय ने किया। आभार मोहन चौहान एवं shekshpear महेश दुबे, NR शर्मा ने किया। इस अवसर पर काफी संख्या में उपस्थित लोगों में प्रमुख विनोद agarwal, मुनीर खान, AB खान , निगम, k k नेमा, राजू सोनी, BK आर्य आदि मौजूद थे।

नंदेश्वर महादेव मंदिर में शिव महापुराण के छठे दिन हुई हनुमानजी की जन्म की सुंदर कथा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

नंदेश्वर महादेव मंदिर अविनाश नगर में शिव महापुराण के छठे दिन हनुमान जी की जन्म की सुंदर कथा का वर्णन किया गया। सभी ने हनुमान जी की पूजा अर्चना की ।इस अवसर पर राम मंदिर बरखेड़ा के पुजारी जी द्विवेदी जी एवं सोनागिरी से विश्वकर्मा जी सुरभि अविनाश राम कुमार गुप्ता शहर मातृशक्ति एवं श्रद्धालुओ ने कथा में शामिल होकर धर्म लाभ ग्रहण किया। शिव शंकर के मधुर भजनों पर मातृशक्ति ने सुंदर नृत्य किया। कल समापन होगा कथा का समय 2:00 बजे से 5:00 बजे के मध्य है।

केदारेश्वर महादेव मंदिर मैं हरियाली महोत्सव मनाया जाएगा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

उत्तराखंड के कुमाऊं समाज के द्वारा 3 अगस्त रविवार समय दोपहर 4:00 बजे से एफ (F) सेक्टर बरखेड़ा पठानी स्थित केदारेश्वर महादेव मंदिर मैं हरियाली महोत्सव मनाया जाएगा। उत्तराखंड के कुमाऊं समाज की सभी माताए बहने उपस्थित रहेगी वहां समाज के लोकगीत लोक नृत्य, हास्य नाटक भी भी बच्चों महिलाओं के द्वारा किए, *समाज के संरक्षक केवल मिश्रा ने जानकारी देते हुए बताया की हरेला महोत्सव उत्तराखंड का एक अनोखा कार्यक्रम है।

आस्था और राष्ट्रभक्ति के रंग में रंगा शीतलदास की बगिया का माहौल, सिंधी समाज ने झूलेलाल महोत्सव में मनाया 'हिंदुत्व की जीत का उत्सव'

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी भोपाल में शुक्रवार की शाम एक ओर जहां आस्था का सागर उमड़ा, वहीं दूसरी ओर झूठे 'भगवा आतंकवाद' नैरेटिव की न्यायपूर्ण पराजय पर पूरे माहौल में हिंदुत्व की विजय की गर्जना सुनाई दी। शीतलदास की बगिया में आयोजित झूलेलाल चालिया महोत्सव के तहत झूलेलाल की फ़ौज ने सिर्फ आराधना ही नहीं की, बल्कि हिंदू धर्म को कलंकित करने की साजिशों के अंत पर आभार उत्सव भी मनाया।

"जय झूलेलाल" के जयकारों के बीच उमड़ा राष्ट्रधर्म का सैलाब : 16 जुलाई से 24 अगस्त तक चलने वाले इस पारंपरिक महोत्सव की शुक्रवार की संध्या विशेष रही। श्रद्धालुओं ने पारंपरिक पल्लव पहनकर विधिविधान से भगवान झूलेलाल की पूजा की और जल आराधना करते हुए विश्व शांति, सांप्रदायिक समरसता और राष्ट्र कल्याण की प्रार्थना की। आरती और शंखनाद से पूरा परिसर गूंज उठा। इस महोत्सव में मालेगांव बम विस्फोट केस का जिक्र आते ही श्रद्धालुओं की आंखों में भावुकता और गर्व दोनों दिखे। कांग्रेस और वामपंथी संगठनों द्वारा 'भगवा आतंकवाद' का जो झूठा नैरेटिव गढ़ा गया था, उसे कोर्ट ने पूरी तरह खारिज कर सभी आरोपियों को बरी कर दिया। सिंधी समाज ने इस फैसले को 'सत्य और सनातन की जीत' बताते हुए भगवान झूलेलाल की आरती कर न्यायपालिका का आभार जताया। श्रद्धालुओं का कहना था, "सालों तक हमारे धर्म को बदनाम करने की साजिश चली, लेकिन आखिरकार सच की जीत हुई। भगवान झूलेलाल की कृपा और न्याय व्यवस्था ने हिंदू समाज को झूठे कलंक से मुक्त कर दिया।"

भगवा का मतलब तपस्या, राष्ट्रप्रेम और संस्कृति की रक्षा : डॉ केसवानी इस मौके पर बीजेपी प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश केसवानी ने कहा, "सालों तक कांग्रेस ने सत्ता की भूख में हिंदू समाज को बदनाम करने की साजिश रची। 'भगवा आतंकवाद' जैसे झूठे शब्द गढ़े गए, साध्वी और संतों को जेल में डाला गया, लेकिन अब सच सामने है – सब निर्दोष हैं! न्यायपालिका ने साबित कर दिया है कि भगवा का मतलब आतंक नहीं, बल्कि तपस्या, राष्ट्रप्रेम और संस्कृति की रक्षा है।" "झूलेलाल महोत्सव सिर्फ पूजा नहीं, ये उस अधर्म के खिलाफ निर्णायक जवाब है जिसने वर्षों तक सनातन को कलंकित करने की कोशिश की। सिंधी समाज ने जिस गरिमा से आज इस झूठ को खारिज किया है, वो पूरे भारत के लिए संदेश है – अब कोई भी हिंदू समाज को बदनाम नहीं कर सकता। हम झुकेंगे नहीं, रुकेंगे नहीं!"

हिंदू समाज को अपमानित करने वालों के खिलाफ खड़ी हैं झूलेलाल फौज : पंडित रवि शर्मा- वहीं झूलेलाल फौज के अध्यक्ष पंडित रवि शर्मा ने कहा की, "कांग्रेस और वामपंथियों ने 'भगवा आतंकवाद' का झूठ फैलाकर सिर्फ हिंदू समाज नहीं, भगवान झूलेलाल की आस्था और परंपरा पर भी हमला किया था। उन्होंने संतों को जेल में डाला, साध्वियों को प्रताड़ित किया, और निर्दोषों को देशद्रोही बना दिया – ये केवल राजनीतिक षड्यंत्र नहीं, सनातन पर सीधा प्रहार था।"

"आज कोर्ट ने सच उजागर कर दिया है - भगवा आतंकवाद जैसा कुछ था ही नहीं! यह झूठा प्रपंच हिंदू विरोधी मानसिकता का परिणाम था। अब वक्त आ गया है कि ऐसी मानसिकता रखने वालों को जनता लोकतंत्र के हथियार से जवाब दे।" "झूलेलाल फौज हर उस प्रयास के खिलाफ खड़ी है जो हिंदू समाज को अपमानित करता है। हम अब चुप नहीं बैठेंगे। यह आरती नहीं सिर्फ पूजा का हिस्सा नहीं थी – यह उस षड्यंत्र के विरुद्ध युद्धघोष था जिसने भगवा को आतंक से जोड़ने की साजिश की थी। सनातन धर्म अपमान नहीं सहता – जवाब देता है। और अब हम जवाब दे चुके हैं!"

पहुंच से बाहर सोना!

नौ कैरेट और 14 कैरेट के गहनों की शायद ही पहले कभी मांग रही हो, जैसी अब है। जबकि नौ कैरेट सोने का भाव भी प्रति दस ग्राम लगभग 35 हजार रुपये और 14 कैरेट सोने का तकरीबन 59 हजार रुपये है। भारत में स्वर्ण के रिटेल कारोबारियों की उम्मीद अब हलके जेवरात पर टिकी है। कारण सोने का इतना महंगा हो जाना है, जिससे भारत के महंगे गहने अब आम उपभोक्ताओं की पहुंच से बाहर हो गए हैं। नौ कैरेट और 14 कैरेट के गहनों की शायद ही पहले कभी ऐसी मांग रही हो, जैसी अब बनी है। जबकि इस समय नौ कैरेट सोने का भाव भी प्रति दस ग्राम लगभग 35 हजार रुपये और 14 कैरेट सोने का तकरीबन 59 हजार रुपये है। प्रति दस ग्राम 24 कैरेट सोने का भाव एक लाख रुपये के पास है, जबकि 22 कैरेट 91-92 हजार रुपये में मिल पा रहा है। भारत में सोने के गहनों का खास सांस्कृतिक महत्त्व रहा है। मगर अब उन लोगों के लिए ऐसे तकाजों को पूरा करना मुश्किल हो गया है, जिनका बजट एक लाख रुपये कम हो। कम बजट वाले खरीदारों के बाजार से बाहर हो जाने का ही नतीजा है कि बीते जून में सोने की बिक्री में 60 फीसदी की अभूतपूर्व गिरावट दर्ज हुई। ऐसी गिरावट सिर्फ कोरोना महामारी के दौरान लॉकडाउन के समय देखने को मिली थी। लेकिन वह असाधारण समय था। बहरहाल, सोने की ये महंगाई वक्ती नहीं है। यह विश्व वित्तीय व्यवस्था में तेजी से आ रहे बदलावों का नतीजा है। 1971 के बाद ऐसा पहली बार हो रहा है, जब दीर्घकालिक ट्रेंड के तौर पर सेंट्रल बैंक एवं निवेशक डॉलर की जगह सोने का भंडार बना रहे हैं। कई देश तो डॉलर बेच कर सोना खरीद रहे हैं। यह अमेरिकी डॉलर की गिरती साख और उसमें घट रहे भरोसे का संकेत है। अब तक डॉलर विश्व मुद्रा है, मगर अनेक देश अब अपनी मुद्राओं में अंतरराष्ट्रीय भुगतान को तरजीह दे रहे हैं। ऐसे में अपनी मुद्रा को मजबूत बनाने के क्रम में उनके लिए अपने भंडार में सोना रखना जरूरी हो गया है। तो गुजरे तीन वर्षों में जितने संगठित ढंग से सोने की खरीदारी हुई है, वैसे गुजरे दशकों में कभी नहीं हुआ। नतीजतन दुनिया भर में सोना महंगा हुआ है। और इसी की मार भारतीय उपभोक्ता झेल रहे हैं।

सवाल जहां के तहां!

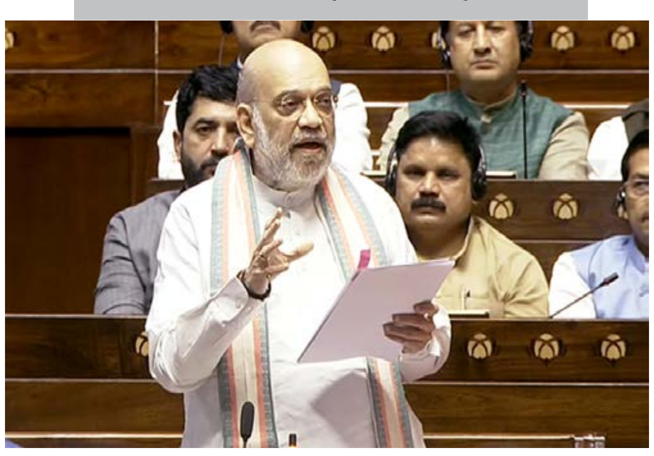

दुर्भाग्यपूर्ण है कि संसद में लंबी चर्चा और उस पर सरकार के जवाब के बाद भी गंभीर एवं महत्त्वपूर्ण प्रश्न अब अनुत्तरित बने रह जाते हैं। बहसें दोनों पक्षों के बीच आरोप- प्रत्यारोप का मौका भर बन कर रह जाती हैं। लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर दो दिन की गरमागर्म बहस के बावजूद वे सवाल जहां के तहां हैं, जो मई में चार दिन तक चली इस लड़ाई के दौरान उठे थे। देश को आज भी यह आधिकारिक रूप से मालूम नहीं है कि क्या 6-7 मई की रात भारत के लड़ाकू विमान गिरे, ऑपरेशन सिंदूर अपना मकसद को साधने में कितना कामयाब हुआ और 10 मई को अचानक इसे रोक देने पर भारत सरकार क्यों राजी हो गई थी? सरकार की तरफ से दावा जरूर किया गया कि भारत ने अपना मकसद पूरा किया और युद्धविराम कराने में "किसी विश्व नेता" की भूमिका नहीं थी। मगर ये दावे पहले भी किए गए हैं। आखिर यह कहने का मतलब क्या है कि भारत का मकसद पूरा हो गया? क्या पाकिस्तान में आतंकवाद का ढांचा नष्ट हो गया है और भारत अब पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद की चिंता से मुक्त हो जाने की स्थिति में है? फिर सवाल "किसी विश्व नेता" की नहीं, बल्कि सीधे अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के ढाई दर्जन बार किए दावों को लेकर है कि युद्धविराम उन्होंने करवाया। ऐसे में जब तक सरकार सीधे उनका नाम लेकर दावों का खंडन नहीं करती, इससे जुड़े प्रश्न बने रहेंगे। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि संसद में चर्चा और उस पर सरकार के जवाब के बाद भी अब गंभीर एवं महत्त्वपूर्ण प्रश्न अनुत्तरित बने रह जाते हैं। बहसें महज आरोप- प्रत्यारोप का मौका बन जाती हैं, जिस दौरान दोनों पक्षों में यह दिखाने की होड़ रहती है कि उनमें किसने अपने शासनकाल में क्या हासिल किया? दूसरे पक्ष को छोटा दिखाना इसी प्रवृत्ति का दूसरा पहलू है। गौरतलब है कि बहस ऑपरेशन सिंदूर पर हो रही थी। इस पर नहीं कि जवाहर लाल नेहरू की क्या नाकामियां थीं या इंदिरा गांधी कितनी साहसी नेता थीं! कुछेक भाषणों को छोड़ दें, तो ज्यादातर वक्त संसद ऐसे ही अप्रासंगिक दावों एवं आरोपों में उलझी रही। परिणाम यह है कि लंबी बहस के बावजूद दोनों पक्ष अपनी- अपनी राय पर कायम हैं। मतलब यह कि ध्रुवीकृत समूहों के बीच सार्थक संवाद की भूमिका संसद फिर नहीं निभा पाई।

बहस तो अधूरी ही रह गई!

संसद के मानसून सत्र का इंतजार सबको था। इंतजार इसलिए था क्योंकि सरकार ने पहलगाम कांड और ऑपरेशन सिंदूर के बाद विशेष सत्र बुलाने की विपक्ष की अपील पर ध्यान नहीं दिया था। संसद में खड़े होकर विपक्ष को जवाब देने और देश के नागरिकों को इसकी सचाई बताने की बजाय सरकार दुनिया भर के देशों में डेलिगेशन भेज कर उनके सामने अपना पक्ष रख रही थी। तभी जब मानसून सत्र की शुरुआत हुई और यह तय हुआ कि दूसरे हफ्ते के पहले दिन यानी सोमवार, 28 जुलाई को पहलगाम कांड व ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा शुरू होगी तो उम्मीद थी कि इनसे जुड़े समूचे घटनाक्रम की सचाई सामने आएगी। सरकार हर पहलू के बारे में जानकारी देगी। विपक्ष जो सवाल पहले से उठा रहा है और जो सदन में सवाल उठाए जाएंगे, उनका वस्तुनिष्ठ तरीके से जवाब दिया जाएगा। लेकिन अफसोस की बात है कि दो दिन की लंबी चर्चा और प्रधानमंत्री के लंबे भाषण के बाद भी बहस अधूरी ही रह गई। इस बहस के बाद यह धारणा भी मजबूत हुई कि भारत में संसदीय बहसों का स्तर लगातार गिरता जा रहा है और सारी संसदीय बहस सिर्फ राजनीति साधने और चुनावी लाभ के लिए होती हैं। किसी भी सभ्य लोकतंत्र में संसदीय बहसें ऐसी नहीं होती हैं। भारत में भी कोई संविधान सभा की बहस के दस्तावेज पढ़े तो उसे भी आज जो हो रहा है उस पर शर्म ही आएगी। बहरहाल, पहलगाम कांड और ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े कौन से सवाल थे, जिनके वस्तुनिष्ठ जवाब की जरुरत थी, उस पर आने से पहले एक रूपक के जरिए इस बहस को समझते हैं। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के बिजली मंत्री का एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें एक व्यक्ति उनसे बिजली नहीं आने की शिकायत कर रहा था। वह व्यक्ति कह रहा था कि सिर्फ तीन घंटे बिजली आती है और अधिकारी कोई सुनवाई नहीं कर रहे हैं। थोड़ी देर तक यह बात सुनने के बाद माननीय बिजली मंत्री ने अपने गले में पड़ी ढेर सारी मालाएं निकालीं और जोर से नारा लगाया, जय श्रीराम! बात वही खत्म हो गई। लोकसभा में पहलगाम कांड और ऑपरेशन सिंदूर पर सत्तापक्ष यानी भाजपा और उसके सहयोगी दलों के सभी नेताओं का भाषण इसी श्रेणी का था। सवालों का जवाब देने की बजाय सत्तापक्ष के लगभग सारे वक्ता सेना के शौर्य का गुणगान कर रहे थे, अपनी पीठ थपथपा रहे थे, अपनी छाती ठोक रहे थे और 77 साल पहले वाली सरकार की कमियां गिना रहे थे। सोचें, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने करीब एक सौ मिनट के भाषण में 14 बार देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का नाम लिया! क्या पहलगाम कांड और ऑपरेशन सिंदूर पर होने वाली चर्चा में देश के लोग यही सुनना चाहते थे? नेहरू की गलतियां थीं या इंदिरा गांधी ने गलती की या उसके बाद की कांग्रेस सरकारों ने गलतियां कीं तभी तो देश की जनता ने भाजपा और नरेंद्र मोदी को मौका दिया है! अब तो देश के लोग इस सरकार से उम्मीद कर रहे हैं। नेहरू का या इंदिरा गांधी का नाम लेकर किसी भी तात्कालिक मुद्दे पर अपनी जिम्मेदारी से नहीं बचा जा सकता है। नेहरू की गलतियां अपनी जगह हैं, जिनके बारे में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ, भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी एक सौ साल से बोल रहे हैं। लेकिन लोग तो यह जानना चाहते थे कि पर्यटकों की उतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद पहलगाम घाटी में एक भी सुरक्षाकर्मी क्यों नहीं तैनात था? लोग यह जानना चाहते थे कि आतंकवादी 20 मिनट तक तांडव करते रहे और उतनी देर में एक भी सुरक्षाकर्मी नहीं पहुंचा और आतंकवादियों के जवाब देने के लिए एक भी गोली नहीं चली तो ऐसा क्यों हुआ? यह तो संभव नहीं है कि नेहरू या इंदिरा गांधी ने ऐसा करने से रोक दिया था? सरकार को इस पर जवाब देना चाहिए था और अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए थी। लेकिन प्रधानमंत्री के इतने लंबे भाषण में एक बार भी पहलगाम में मारे गए 26 बेकसूर नागरिकों का जिक्र नहीं आया। देश के लोग जानना चाहते थे कि ऑपरेशन सिंदूर हुआ, जिसमें भारतीय सेना ने अप्रतिम शौर्य का प्रदर्शन किया तो फिर 88 घंटे के भीतर सीजफायर क्यों हो गया? जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा कि पाकिस्तान के सैन्य अभियानों के महानिदेशक यानी डीजीएमओ ने भारत के डीजीएमओ से गुहार लगाई कि पाकिस्तान अब और हमला नहीं झेल सकता है तो युद्धविराम हो गया। सवाल है कि पाकिस्तान मजबूर था कि वह हमारा हमला नहीं झेल पा रहा था लेकिन हमारी क्या मजबूरी थी? हमने क्यों सीजफायर स्वीकार कर लिया? अगर स्वीकार किया तो पाकिस्तान के सामने क्या शर्तें रखीं और क्या उसने हमारी कोई शर्त स्वीकार की? दुनिया के तमाम सामरिक और रक्षा विशेषज्ञों ने कहा कि भारत को दो तीन दिन और हमले जारी रखने चाहिए थे ताकि पाकिस्तान का सैन्य ढांचा स्थायी रूप से खत्म हो और उसके सैन्य नेतृत्व की कमजोरी पाकिस्तान की जनता के सामने जाहिर हो। लेकिन इसका उलटा हुआ। बिना शर्त युद्धविराम की वजह से पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व को छाती ठोक कर जीत का दावा करने का मौका मिला और आज पाकिस्तान का सैन्य नेतृत्व पहले से ज्यादा मजबूती और ताकत के साथ भारत विरोधी गतिविधियों में लगा है। पाकिस्तान और पाकिस्तान के बाहर भी उसकी प्रतिष्ठा कम होने की बजाय बढ़ गई है। ऐसा क्यों हुआ कि भारत जीतता हुआ पक्ष था लेकिन उसने बिना शर्त सीजफायर कर लिया, इस सवाल का जवाब नहीं दिया गया। सीजफायर कराने के अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दावे का भी स्पष्ट जवाब नहीं दिया गया। प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया के किसी नेता ने सीजफायर नहीं कराई। वे संसद में वही बोले, जो ब्राजील में जी 7 देशों के सम्मेलन में बोले थे। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के डीजीएमओ ने गुहार लगाई थी। उन्होंने यह भी दोहराया कि अमेरिका के उप राष्ट्रपति जीडी वेंस ने उनसे कहा कि पाकिस्तान बड़ा हमला करने वाला है तो उन्होंने कहा कि हम उससे बड़ा हमला करेंगे। सवाल है कि फिर ऐसा क्या हुआ कि पाकिस्तान ने हमला नहीं किया और हमें हमला करने की जरुरत नहीं पड़ी? कुछ तो हुआ परदे के पीछे, जिसके बाद सीजफायर हुआ! प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री को बताना चाहिए था कि क्या हुआ, जिसकी वजह से बिना शर्त सीजफायर की नौबत आई। विडम्बना यह है कि जिस समय प्रधानमंत्री ने संसद में कहा कि दुनिया के किसी नेता ने जंग नहीं रूकवाई लगभग उसी समय अमेरिका में ट्रंप ने दोहराया कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान की जंग रूकवाई। ध्यान रहे दुनिया का कोई नेता सीजफायर का श्रेय नहीं ले रहा है, सिर्फ ट्रंप ले रहे हैं। इसलिए दुनिया कि किसी नेता ने नहीं रूकवाई कहने की बजाय अगर प्रधानमंत्री मोदी एक बार कह दें कि ट्रंप ने जंग नहीं रूकवाई तो बात खत्म हो। लोग यह सुनना चाहते थे लेकिन यह नहीं कहा गया। एक और अहम बात जो पूरी चर्चा में मिसिंग रही वह ये है कि भारत को कितना नुकसान हुआ। पेंसिल टूटने की बात कही गई लेकिन यह भारत के प्रतिरक्षा प्रमुख यानी सीडीसी जनरल अनिल चौहान की बात का स्पष्टीकरण नहीं है और न जकार्ता दूतावास के भारत के डिफेंसे अताशे कैप्टेन शिवकुमार की बात का जवाब है। दोनों ने भारत के नुकसान की बात कही थी। कैप्टेन शिवकुमार ने तो नुकसान के लिए राजनीतिक फैसले को जिम्मेदार बताया था। लेकिन पूरी बहस में सरकार की ओर से इसका जवाब नहीं दिया गया। भारत को कितना और क्या नुकसान हुआ यह बताया जाना चाहिए था या फिर यह कहा जाना चाहिए था कि सेना के दोनों अधिकारियों ने जो कहा वह सही नहीं है। भारत और पाकिस्तान के बीच हुई सीमित जंग में चीन सक्रिय भागीदार था और यह बात भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि चीन ने पाकिस्तान का इस्तेमाल किया। उसने पाकिस्तान के जरिए भारत के खिलाफ अपने हथियारों का परीक्षण किया। भारत के खिलाफ युद्ध में चीन की सक्रिय भागीदारी के बावजूद रक्षा मंत्री और विदेश मंत्री दोनों चीन के दौरे पर गए और जब ऑपरेशन सिंदूर पर संसद में चर्चा हुई तो उस बारे में कुछ नहीं कहा गया। यह सही है कि इतने बड़ा घटनाक्रम के बावजूद भाजपा और नरेंद्र मोदी को कोई राजनीतिक नुकसान होता नहीं दिख रहा है। लेकिन समर्थक वर्ग को परवाह नहीं है क्या इस वजह से इतने अहम सवालों का जवाब नहीं दिया जाएगा?

दिल्ली की गाड़ियां, अब सुध आई!

दिल्ली की सरकार को दिल्ली वालों की गाड़ियों की अब जाकर फिक्र हुई है। दिल्ली सरकार सुप्रीम कोर्ट पहुंची है, जहां उसने यह तर्क दिया है कि पुरानी गाड़ियों को सड़क पर से हटाने के लिए उनकी उम्र नहीं, बल्कि फिटनेस देखनी चाहिए। सरकार ने कहा है कि सिर्फ 15 साल पुरानी हो जाने की वजह से गाड़ी को नहीं हटाना चाहिए, बल्कि उसके प्रदूषण का स्तर चेक करके तब उसे हटाना चाहिए। यह बहुत समझदारी और तार्किक बात है लेकिन सरकार को और प्रदूषण पर सुझाव देने वाली एजेंसी को पहले क्यों नहीं सूझी? यह भी सवाल है कि एजेंसी ने सुप्रीम कोर्ट को यह सुझाव दिया तो वहां दिल्ली की सरकार ने इसका विरोध क्यों नहीं किया था? ऐसा लग रहा है कि मध्य वर्ग की नाराजगी को लेकर सोशल मीडिया में जो ट्रोलिंग शुरू हुई है उससे घबरा कर सरकार पुराने फैसले से पीछे हट रही है। ध्यान रहे पिछले कई सालों से यह अभियान चल रहा था। भले इस साल एक जुलाई से पुरानी गाड़ियों को पेट्रोल और डीजल नहीं देने का अभियान शुरू हुआ था लेकिन 15 साल पुरानी पेट्रोल गाड़ी और 10 साल पुरानी डीजल गाड़ी को सड़क से हटाने के अभियान कई साल पहले शुरू हो गया था। लोगों की दरवाजे के सामने खड़ी गाड़ियां उठाई गईं। दिल्ली नगर निगम के लोग टीम लेकर दिल्ली की कॉलोनियों में घूमते थे और फोन ऐप पर गाड़ियों के नंबर चेक करके देखते थे कि कौन सी गाड़ी कितनी पुरानी है। अगर समय सीमा से ज्यादा पुरानी गाड़ी दिख जाती थी तो वहीं नोटिस देते थे, जुर्माने का भय दिखाते थे और गाड़ी उठा कर ले जाने की धमकी देते थे। मजबूरी में लोग स्क्रैप वालों से या एजेंसी वालों से गाड़ियां बेचते थे। एक बहुत बड़ा नेक्सस काम कर रहा था, जो अब भी कर रहा है। उसे रोकने की जिम्मेदारी सरकार, न्यायपालिका और मीडिया सबकी है।

दुबई अब ट्रांज़िट शहर नहीं घर भी है!

दुबई अब महज़ घूमने की एक जगह नहीं है। वह भारत के लोगों का ठिकाना हो गया है। अगर कैलेंडर पर लंबा वीकेंड दिखे, तो तय मानिए कोई न कोई जान-पहचान वाला दुबई के लिए बैग पैक कर चुका होगा। बीते कुछ सालों में यह शहर चुपचाप गोवा और मनाली को पीछे छोड़, शहरी भारतीयों के लिए डिफॉल्ट छुट्टी डेस्टिनेशन बन गया है। अब पहाड़ी कैफ़े की जगह इंस्टाग्राम पर अटलांटिस के पूलसाइड ब्रंच की तस्वीरें छाई रहती हैं। और जब एयर इंडिया दुबई के रिटर्न टिकट उस दाम में देने लगे, जितना श्रीनगर का वन-वे टिकट पड़ता है, तो समझ जाए कि कि रेगिस्तान की उड़ान अब घाटी से भी सस्ती है। फिर भी, मैं कभी दुबई नहीं गई। ना छुट्टी में, ना काम से, ना ट्रांज़िट में। और आज की ग्लोबल हसल कल्चर में, ये अपने-आप में एक सोशल ऐनोमली लगता है। सच कहूँ तो, मैं दुबई की दीवानगी को समझ नहीं पाई। वो आकर्षण, वो जल्दबाज़ी, वो चमक के पीछे भागना—मुझे कभी समझ नहीं आया। बाकी बहुत से भारतीयों के विपरीत, मुझे दुबई उतना मनभावक, लाभदायक नहीं लगा, जितना अपना दार्जिलिंग या दीव। लेकिन आज मैं यदि दुबई शहर के बारे में लिख रही हूँ तो जाहिर है कुछ बदला है। एक हेडलाइन ने मेरा ध्यान खींचा: "2025 की पहली छमाही में दुबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट ने 4.6 करोड़ यात्रियों का स्वागत किया, जबकि क्षेत्रीय एयरस्पेस में बाधा भी थी। इसमें से अकेले भारत के 59 लाख यात्री थे।" मतलब बात सिर्फ़ टैक्स-फ्री शॉपिंग या ऊँची इमारतों की नहीं है। यह शहर अब एक मानसिकता बन गया है—एक माइंडसेट। एक ऐसा नज़रिया, जो दिखावे से आगे जाकर कुछ और भी पेश करता है। मुझे अपने मामा की बात याद आई: "अगर मैंने दो महीने से न्यूज़ नहीं देखी, तब भी मैं बता सकता हूँ किस देश में संकट है—सिर्फ़ यह देखकर कि मेरी बिल्डिंग में कौन नया शिफ्ट हुआ है।" हाल के दिनों में उन्होंने ज़्यादा इज़रायली और फिलिस्तीनी देखे। उससे पहले, रूसी और यूक्रेनी। दुबई अब एक न्यूट्रल ज़ोन बन चुका है—एक भू-राजनीतिक वेटिंग रूम, जहाँ दुनिया के विस्थापित, मोहभंग से भरे और महत्वाकांक्षी लोग आकर रुकते हैं, खुद को फिर से शुरू करते हैं, और फिर थोड़ा और रुक जाते हैं। और इसी सांस्कृतिक मिश्रण में भारतीय सिर्फ़ टूरिस्ट बनकर नहीं आ रहे—वे यहाँ बस भी रहे हैं। कभी ये शहर रेगिस्तान के किनारे एक छोटा-सा बंदरगाह था। लेकिन अगर दुबई को समझना है, तो उसकी स्टील और चमक को हटाकर इतिहास में झाँकना होगा। एक समय था जब ये इलाका एक दलदली मैन्ग्रोव क्षेत्र हुआ करता था। फिर आया 1833, जब बनी यास जनजाति के मक्तूम बिन बुत्ती ने यहाँ डेरा डाला और दुबई क्रीक को अपना ठिकाना बना, इसे स्वतंत्र घोषित किया। अल मक्तूम वंश ने व्यापारिक करों को हटाकर भारत और पाकिस्तान से व्यापारियों का स्वागत किया। लेकिन जब जापानी नकली मोतियों ने बाज़ार बिगाड़ा, तब 1966 में तेल की खोज ने दुबई की कहानी को एक नया, काले सोने वाला अध्याय दे दिया। लेकिन असली क्रांतिकारी मोड़ तेल से नहीं, बल्कि उस पल आया जब तेल की चमक कम होने लगी। तब दुबई टूटा नहीं, उसने खुद को फिर से गढ़ा। शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मक्तूम ने एक नया सपना देखा—शहर से बड़े मॉल, खजूर जैसे आकार के आइलैंड्स, और आसमान छूती इमारतें। भविष्य अब तेल से नहीं, पर्यटन से चलेगा। सो अब दुबई की जीडीपी (GDP) का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा टूरिज़्म से आता है—तेल से लगभग दोगुना। सवाल है अब भी वही, पुरानी दुबई भारतीयों के लिए इतनी आकर्षक क्यों है? इतना ही नहीं अब पश्चिमी दुनिया के लिए भी है? कुछ के लिए यह शहर ग्लैमर है, कुछ के लिए सहूलियत। लेकिन बहुत से भारतीयों के लिए ये है—आकांक्षा बिना बेगानगी के। ये शहर ग्लोबल है, फिर भी अपना-सा लगता है। चिकना है, लेकिन सुलभ भी। शेंगेन वीज़ा जैसी कोई ज़रूरत नहीं। मेट्रो में कोई घूरता नहीं। चाहे आप टेक कंसल्टेंट हों, फ़ैशन इन्फ्लुएंसर या इंदौर से आई एक पाँच लोगों की फ़ैमिली—यहाँ आपके लिए एक जगह है। दुबई आपसे घुलने-मिलने की उम्मीद नहीं करता, वो बस आपको आने देता है। यहाँ सब कुछ साफ़-सुथरा है, व्यवस्थित है, और अजीब तरह से असरदार। यह ग्लोबल है, लेकिन ठंडा नहीं। यह लक्ज़री है, लेकिन नखरे वाला नहीं। और यह फिनिशिंग टच के बावजूद, कहीं न कहीं भारतीय-सा लगता है। आज ग्लोबल साउथ से ज़्यादा से ज़्यादा स्किल्ड प्रोफेशनल्स खाड़ी की तरफ़ रुख़ कर रहे हैं। अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका से पढ़े-लिखे लोग दुबई को अब मजबूरी में नहीं, पहले विकल्प के तौर पर चुन रहे हैं। वजहें साफ़ हैं—वीज़ा आसान, महत्वाकांक्षा का स्वागत, और सफलता के लिए किसी सांस्कृतिक क्षमा की ज़रूरत नहीं। खाड़ी की सरकारें भी अब बदली हैं—लॉन्ग टर्म वीज़ा, लचीली रेसिडेंसी, और लोकल स्पॉन्सर की ज़रूरत ख़त्म। खाड़ी अब सिर्फ़ मज़दूरों या यूरोपीय प्रवासियों का अड्डा नहीं, बल्कि इंजीनियर, कलाकार, शिक्षक, वकील, शेफ और एंटरप्रेन्योर के लिए भी खुला है। शायद अभी तय नहीं। लेकिन इतना तय है कि दुबई अब महज़ एक लेओवर नहीं रहा—यह वह शहर है जहाँ कुछ नया, चमकदार और टिकाऊ बन सकता है। और मैं? मुझे अब भी नहीं पता कि दुबई मेरे भीतर के पत्रकार, उस लेखक जिसे मैं बनना चाहती हूँ, या मेरे पति जो पहले ही फ़ोटोग्राफ़र हैं—उनके लिए क्या रखता है। यह शहर अब हमें आकर्षित करने लगा है, हाँ। लेकिन क्या यह भीतर तक झकझोरता है? इस शहर की चमक के पीछे क्या ऐसे क़िस्सों की जगह है जो 'क्यूरेटेड' नहीं हैं? क्या यहां वैसी तस्वीरों की गुंजाइश है जो बिना फ़िल्टर के हों, बिना तमाशे के? मैं एक करीबी को जानती हूँ जो इस दुबई को अपना घर बनाने का सोच रहा है। और मैं समझ सकती हूँ क्यों? जब एक शहर जो कभी मछलियों और मोतियों का व्यापार करता था, आज सपनों और डिजिटल भविष्य का एक्सपोर्टर बन गया है—तो ये सिर्फ़ ट्रेंड नहीं हो सकता। शायद यह एक बदलाव है। तो क्या मैं जाऊँगी? शायद। लेकिन सिर्फ़ बुर्ज खलीफ़ा की सेल्फ़ी के लिए नहीं। मैं देखना चाहती हूँ कि यह शहर क्यों चर्चा में है—और क्यों, इस बंद होती दुनिया में, दुबई वो जगह बन गया है जो बाहें फैलाकर स्वागत करता है। क्यों लोग एक बार आते हैं, और फिर चुपचाप यहीं बस जाने का फ़ैसला कर लेते हैं।

-श्रुति व्यास

मुंबई में कनाडा के कॉन्सुल जनरल की नियुक्ति... मार्क कार्नी ने भारत की तरफ बढ़ाया दोस्ती का हाथ, सुधरेंगे संबंध

एजेंसी ओटावा

कनाडा और भारत के रिश्ते में करीब दो साल की तनातनी के बाद चीजें बेहतर होती दिख रही हैं। इसका संकेत कनाडा की भारत में कई राजनयिक नियुक्तियों की घोषणा से मिला है। इन नई नियुक्तियों में जेफ डेविड का नाम भी शामिल है, जो मुंबई में महावाणिज्य दूत (कॉन्सुल जनरल) का पद संभालेंगे। यह नियुक्ति विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे अक्टूबर 2023 में शुरू हुई राजनयिक तनातनी खत्म होती दिख रही है। फर्स्टपोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, डेविड की मुंबई में नियुक्ति दोनों देशों के बीच बिगड़े संबंधों के बाद (करीब दो साल) से भारत में कनाडा की पहली आधिकारिक तैनाती है। यह कदम कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी की ओर से नए राजनयिक पुनर्गठन का संकेत देता है। मार्क कार्नी से पहले कनाडा के पीएम रहे जस्टिन ट्रूडो ने भारत के लिए रूखा रवैया अपनाया था, जिससे संबंधों में गिरावट आई थी। जस्टिन ट्रूडो की सरकार के समय कनाडा की ओर से भारत पर कई आरोप लगाए गए थे। इनमें सबसे अहम आतंकी घोषित किए गए कनाडाई नागरिक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंटों की संलिप्तता का आरोप था। इस आरोप को भारत ने नकारा लेकिन कनाडा ने इसे नहीं माना और दोनों देशों के संबंध तेजी से बिगड़ते चले गए। भारत सरकार ने कनाडा के आरोप के जवाब में कनाडाई राजनयिक कर्मचारियों को निष्कासित कर दिया था। अक्टूबर 2024 में निष्कासन की दूसरी लहर आई। इसमें दोनों देशों ने अपने-अपने उच्चायुक्तों सहित छह-छह राजनयिकों को हटाया। इसके बाद भारत से कनाडा के लिए वीजा सेवाएं निलंबित कर दीं और राजनयिक संबंध अभूतपूर्व रूप से निचले स्तर पर पहुंच गए। जस्टिन ट्रूडो के इस्तीफे के बाद इस साल मार्च में मार्क कार्नी ने कनाडा के प्रधानमंत्री का पद संभाला है। कार्नी की विदेश नीति ट्रूडो से अलग दिखी है। उनके समय में भारत और कनाडा के रिश्ते बेहतरी की ओर लौटे हैं। खासतौर

से इस साल जून में जी-7 शिखर सम्मेलन के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को न्योता देकर उन्होंने कदम बढ़ाया। कार्नी ने मोदी से मुलाकात के बाद उनकी मेजबानी को अपने लिए सम्मान की बात कही। नरेंद्र मोदी ने भी दोनों पक्षों के लिए लाभकारी सहयोग के महत्व पर जोर दिया। शिखर सम्मेलन के बाद दोनों नेताओं ने अपनी-अपनी राजधानियों में उच्चायुक्तों को बहाल करने पर सहमति व्यक्त की। जिसके बाद अब इस पर चीजें आगे बढ़ती दिख रही हैं। भारत और कनाडा में हालिया दशकों में कई क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा है, ऐसे में दोनों ही देशों के लिए आपसी रिश्ते बेहतर रखना फायदेमंद है। कनाडा में पढ़ने वाले सबसे ज्यादा छात्र 2024 में भारतीय थे। इसी तरह कनाडा भी भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों के शीर्ष पांच देशों में शामिल है। इससे साफ है कि दोनों देशों के लोग-दूसरे से जुड़ना चाहते हैं। व्यापार के मोर्चे पर बात करें तो पिछले साल द्विपक्षीय वाणिज्य 12.4 अरब डॉलर का रहा। इसका एक खास रणनीतिक महत्व है क्योंकि दोनों देश बढ़ते अमेरिकी व्यापार शुल्कों का सामना करने की कोशिश कर रहे हैं। भारत मुख्य रूप से कनाडा को दवाइयां, आभूषण, कपड़े और मशीनरी निर्यात करता है। कनाडा भारत को पोटाश, लकड़ी, कागज और खनन उत्पादों की आपूर्ति करता है। राजनयिक माहौल में गर्मजोशी के बावजूद कनाडा में सिख अलगाववादी गतिविधियों को लेकर भारत की चिंता बनी हुई है। खालिस्तानी एजेंडे को बढ़ावा देने के आरोपी व्यक्तियों के प्रत्यर्पण और अस्थायी गिरफ्तारी के अनुरोधों का समाधान न होने से नई दिल्ली निराश है। ऐसे में यह मुद्दा भविष्य में भी दोनों दशों में तनाव का सबब बन सकता है।

चीन ने बनाया दुनिया का सबसे ऊंचा पुल, अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर से भी 300 फीट ज्यादा हाइट

एजेंसी बीजिंग

चीन के इंजीनियरों ने कमाल करते हुए सबसे ऊंचा पुल बनाने का अपना ही रेकॉर्ड तोड़ दिया है। चीन में हुआजियांग कैन्यन ब्रिज बनकर तैयार हो चुका है और दुनिया का सबसे ऊंचा पुल बनने जा रहा है। यह चीनी सस्पेंशन ब्रिज एक घाटी से 2,051 फीट ऊपर बनाया गया है। यह इसे दुनिया के सबसे ऊंचे पुलों की फेहरिस्त में टॉप पर पहुंचाता है। इस पुल को चीन ने केवल तीन वर्षों में बनाकर पूरा किया है। यह अपने निर्धारित समय से पहले बनकर तैयार हुआ है, जो इसे और खास बना देता है। हुआजियांग कैन्यन ब्रिज के बनाने में करीब 283 मिलियन डॉलर की लागत आई है। यह अमेरिका की सबसे ऊंची गगनचुंबी इमारत वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (1,776 फीट) से करीब 300 फीट ज्यादा ऊंचाई रखता है। यह सबसे ऊंचे पुल का खिताब डुगे ब्रिज से छीनेगा, जो जमीन से 1,854 फीट ऊंचा है। यह पुल भी चीन में ही बना हुआ है। चीन के दक्षिण-पश्चिमी गुइझोउ क्षेत्र में हुआजियांग घाटी पर इस पुल का निर्माण 2022 में शुरू हुआ था। यह घाटी के तल पर बेइपन नदी के ऊपर स्थित है। इस पुल से घाटी को पार करने में लगने वाला समय एक घंटे से घटकर तीन मिनट हो जाता है। कैलगरी विश्वविद्यालय में सिविल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर ममदौह अलबद्री ने न्यूजवीक से कहा कि इतनी ऊंचाई पर निर्माण की जटिलता के बावजूद यह पुल इस तरह की परियोजना की तुलना में बहुत तेजी से पूरा हुआ है। इस आकार की अन्य संरचनाओं की तरह हुआजियांग कैन्यन ब्रिज भी एक सस्पेंशन ब्रिज है। इसके मुख्य डेक को दोनों सिरों पर वर्टिकल सस्पेंडर्स से लटकाया गया है। इस पुल का आकार पतला और डिजाइन आकर्षक है, जो हवा के प्रतिरोध और सामग्री के उपयोग को कम करता है और घाटी के वातावरण में दृश्य व्यवधान को न्यूनतम करता है। चीन दुनिया के सबसे बड़े पुलों की सूची में सबसे ऊपर है। चीन में दुनिया के छह सबसे ऊंचे पुल हैं। दुनिया के सबसे ऊंचे 50 पुलों में से 43 पुल फिलहाल चीन में हैं। इसके विपरीत केवल तीन अमेरिकी पुल ही शीर्ष 50 की सूची में जगह बना पाए हैं। चीन में इतने पुलों की एक अहम वजह देश के पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों का पहाड़ी होना है। गुइझोउ जैसे क्षेत्रों में पारंपरिक सड़कों से पार पाना संभव नहीं है। इससे पुलों का निर्माण आवश्यक हो जाता है। गुइझोऊ परिवहन विभाग के उपनिदेशक चेन जियानलेई ने एक बयान में कहा है कि हुआजियांग ग्रैंड कैन्यन ब्रिज के पूरा होने से गुइयांग, अंशुन और कियानक्सिनन के बीच आर्थिक संबंध मजबूत होंगे और क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा मिलेगा। यह सुपर परियोजना चीन की इंजीनियरिंग क्षमताओं को भी प्रदर्शित करेगी।

H1-B वीजा कार्यक्रम में बदलाव, नागरिकता टेस्ट में सख्ती... ट्रंप प्रशासन की बड़ी तैयारी, भारतीयों की बढ़ेगी मुश्किल

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिका का H1-B वीजा विदेशियों के लिए यहां काम पाने का एक अहम रास्ता रहा है। दुनियाभर से लोग अमेरिका के इस वीजा को पाने की कोशिश करते हैं। खासतौर से भारतीय बड़ी संख्या में इस वीजा के लिए कोशिश करते है। ट्रंप प्रशासन इस वीजा के जारी करने के नियमों में बड़े बदलाव करने जा रहा है, जिसका भारतीयों पर सीधा असर हो सकता है। ट्रंप प्रशासन नागरिकता टेस्ट को सख्त बनाने पर भी विचार कर रहा है। अमेरिकी नागरिकता और इमिग्रेश सेवा (USCIS)) के नए निदेशक जोसेफ एडलो ने न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए साक्षात्कार में कहा कि ट्रंप प्रशासन कुशल विदेशी कामगारों के लिए H-1B वीजा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन करने का इरादा रखता है। एडलो ने कहा कि अमेरिकी नागरिक बनने का एग्जाम पर बहुत आसान है और इसे बदला जाना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि अभी हम वास्तव में कानून की भावना का पालन कर रहे हैं। विदेशी कर्मचारियों के लिए H-1B वीजा कार्यक्रम अमेरिका की

सत्तारूढ़ रिपब्लिकन पार्टी के भीतर भी लंबे समय से विवाद का विषय रहा है। ट्रंप प्रशासन ने H-1B वीजा चयन प्रक्रिया में बड़े बदलाव की बात कही है। अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग (डीएचएस) और अमेरिकी नागरिकता एवं आव्रजन सेवा (यूएससीआईएस) ने नई H-1B वीजा चयन प्रणाली के लिए वाइट हाउस को प्रस्ताव भी भेज दिया है। फाइनेंशियल एक्सप्रेस के मुताबिक, ट्रंप प्रशासन की ओर से मिले संकेत बताते हैं कि H-1B उम्मीदवारों का चयन कौशल, अनुभव स्तर और वेतन के आधार पर किया जाएगा। इसमें सभी के लिए एक समान बर्ताव की बजाय कुशलता पर चयन किया जाएगा। एडलो ने कहा है कि इसमें उन निगमों को प्राथमिकता दी जाएगी, जो विदेशी श्रमिकों को अधिक वेतन देना चाहते हैं। एडलो ने यह भी कहा कि ट्रंप सरकार संभावित अमेरिकी नागरिकों के लिए जरूरी नागरिकता परीक्षा में बदलाव करना चाहती है। वर्तमान में अप्रवासी नागरिक शास्त्र के 100 प्रश्नों का अध्ययन करते हैं। परीक्षा के इस भाग को पास करने के लिए उन्हें दस में से छह प्रश्नों के सही उत्तर देने होते हैं। एडलो का कहना है कि सरकार जल्द ही उस परीक्षा का एक नया संस्करण फिर से शुरू करने का इरादा रखती है।

ट्रंप की धमकी के बाद यूक्रेन से बातचीत के लिए राजी हुए पुतिन, बताया रूस किन शर्तों पर, कहां करेगा वार्ता

एजेंसी मॉस्को

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन के साथ शांति वार्ता फिर से शुरू करने पर हामी भरी है। हालांकि उन्होंने साफ किया है कि रूस अपनी उन शर्तों को नहीं छोड़ेगा, जिन्हें उसने बार-बार दोहराया है। पुतिन का बयान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आक्रामक रुख के बाद आया है। ट्रंप ने हाल ही में रूस को यूक्रेन में अपना आक्रमण रोकने के लिए 10 दिन की डेडलाइन दी है। उन्होंने कहा है कि युद्ध जारी रहने की स्थिति में 10 दिन बाद अमेरिका की ओर से रूस पर कड़े प्रतिबंधों का ऐलान किया जाएगा। व्लादिमीर पुतिन ने शुक्रवार को कहा कि रूस फिर से कीव के साथ शांति वार्ता शुरू करने को तैयार है। यूक्रेन के साथ वार्ता का समर्थन करते हुए पुतिन ने ये भी कहा कि आक्रमण के पीछे रूस के रणनीतिक लक्ष्य अपरिवर्तित हैं। पुतिन ने दावा किया कि उनके सैनिक यूक्रेन की पूरी अग्रिम पंक्ति में आगे बढ़ रहे हैं और यूक्रेन मुश्किल में घिरा है। पुतिन ने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि रूस और यूक्रेन अपनी शांति वार्ता जारी रखेंगे। हमने इस बात पर सहमति दी है कि बिना कैमरों के और शांत वातावरण में बातचीत की जाए।' पुतिन ने कहा कि इस युद्ध को पूरे यूरोप की सुरक्षा के संदर्भ में देखने की भी जरूरत है। रूस को स्थायी और टिकाऊ शांति की आवश्यकता है, जो पश्चिम नहीं चाहता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को कहा कि अगर रूस ने तेजी से यूक्रेन में युद्ध रोकने के लिए कदम नहीं उठाए तो उनकी ओर से कड़े फैसले लिए जाएंगे। ट्रंप ने कहा कि यूक्रेन में युद्ध समाप्त करने की दिशा में रूस प्रगति नहीं दिखाता है तो अमेरिका 10 से 12 दिनों के भीतर मॉस्को पर टैरिफ लगाएगा। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, 'रूस को बार-बार मौके दिए हैं लेकिन उनको मॉस्को से कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली है। ट्रंप ने पहले 50 दिनों की समय-सीमा तय की थी। उन्होंने कहा कि रूस से कोई कार्रवाई ना होने के कारण वह समय-सीमा कम कर रहे हैं। मैं आज से 10 दिनों की एक नई समयसीमा तय कर रहा हूं। अमेरिका ने गुरुवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में स्पष्ट कहा है कि डोनाल्ड ट्रंप 8 अगस्त तक यूक्रेन में रूस के युद्ध को समाप्त करने के लिए एक शांति समझौता चाहते हैं। अमेरिकी अधिकारी ने संयुक्त राष्ट्र निकाय को बताया कि शांति सुनिश्चित करने के लिए उनका देश अतिरिक्त उपाय लागू करने के लिए तैयार है। रूस और यूक्रेन के बीच फरवरी, 2022 से लड़ाई चल रही है। डोनाल्ड ट्रंप ने इस लड़ाई को रोकने के लिए लगातार कोशिश की है। हालांकि तमाम कोशिशों के बावजूद ट्रंप जंग को रुकवाने में नाकाम दिखे हैं। रूस और यूक्रेन में हालिया हफ्तो में तुर्की में बातचीत भी हुई लेकिन इसमें सिर्फ सैनिकों के शवों की अदला-बदली पर ही बात बन सकी।

पिनाका को टक्कर देने इजरायल ने उतारा नया रॉकेट, भारतीय कंपनी ने एल्बिट के साथ किया समझौता, सूर्या कितना विनाशक

एजेंसी तेल अवीव

भारत की एक डिफेंस कंपनी ने प्रिसाइस एंड यूनिवर्सल लॉन्चिंग सिस्टम (PULS) मल्टीपल रॉकेट लॉन्चर (MRL) का स्थानीय स्तर पर निर्माण करने के लिए इजरायली कंपनी एल्बिट सिस्टम्स के साथ साझेदारी की है। निबे डिफेंस एंड एयरोस्पेस लिमिटेड, जो भारत की एक निजी क्षेत्र की रक्षा कंपनी है, उसने इजरायली कंपनी के प्रिसाइस एंड यूनिवर्सल लॉन्चिंग सिस्टम (PULS) मल्टीपल रॉकेट लॉन्चर (MRL) को भारत में बनाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यानि PULS मल्टीपल रॉकेट लॉन्चर का भारत में ही निर्माण किया जाएगा, जिसका मुकाबला पिनाका रॉकेट सिस्टम से होगा, जिसने अजरबैजान के खिलाफ आर्मेनिया की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) को 28 जुलाई को दी गई एक फाइलिंग में, डिफेंस कंपनी निबे ने समझौते के बारे में जानकारी दी है और कहा है कि MRL को स्थानीय स्तर पर विकसित किया जाएगा। मंजूरी मिलने पर भारतीय सेना को इसकी आपूर्ति की जा सकती है। रिपोर्ट के मुताबिक इस समझौते में ट्रांसफर ऑफ टेक्नोलॉजी शामिल है और इसे 'मेक इन इंडिया' प्रोग्राम के तहत

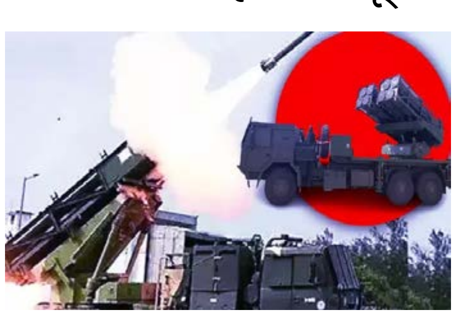

बनाया जाएगा। इससे भारत में लोकल मैन्यूफैक्चरिंग में तेज इजाफा होगा और भारत को तोपखाने प्रणालियों के वैश्विक आपूर्तिकर्ता के रूप में स्थापित किया जा सकेगा। इसके भारतीय वैरिएंट का नाम 'सूर्या' रखा गया है। इस डिफेंस प्लेटफॉर्म की सबसे बड़ी खासियत ये होगी कि ये मिसाइल और रॉकेट, दोनों को एक ही प्लेटफॉर्म से फायर कर सकता है। ये एक अत्यधिक एडवांस सिस्टम है, जिसकी मार करने की क्षमता 300 किलोमीटर तक होगी और इसकी सबसे बड़ी खासियत सटीक हमला करने की होगी, जैसा हमला भारत ने पाकिस्तान में और इजरायल ने ईरान में किए थे। बैरल रॉकेट लॉन्च सिस्टम (MBRLS) को ऑपरेट करती है, जिसे DRDO और इंडियन डिफेंस इंडस्ट्री ने मिलकर डेवलप किया है। यह सिस्टम 1999 के करगिल युद्ध में पहली बार इस्तेमाल किया गया था और उसके बाद इसे कई बार डेवलप किया गया है। Pinaka Mk-1 की रेंज लगभग 37.5 किमी है, जबकि Mk-2 और ER वैरिएंट का रेंज 60–90 किमी के बीच है। यह सिस्टम सिर्फ एक मिनट में 12 रॉकेट फायर कर सकता है। इसके अलावा पिनाका रॉकेट सिस्टम की खासियत यह है कि इसे भारत के अलग अलग हिस्सों, जैसे पहाड़ी इलाके, रेगिस्तानी इलाके और मैदानी इलाकों, सभी जगहों पर तैनात किया जा सकता है। भारत ने साल 2024 में इसे आर्मेनिया को निर्यात किया गया और फ्रांस ने भी इसे खरीदने में गहरी दिलचस्पी दिखाई है। हालांकि पिनाका के साथ एक बड़ी दिक्कत ये है कि यह सिर्फ 214mm कैलिबर रॉकेट्स ही चला सकती है और इसकी रेंज सीमित है। लेकिन PULS की क्षमता 300 किलोमीटर की रेंज है, जो पाकिस्तान के एक बड़े हिस्से को निशाना बना सकता है। फिर भी 214 मिमी बोर वाले पिनाका एमके-1 रॉकेट का पेलोड 100 किलोग्राम है और इसमें विभिन्न प्रकार के वारहेड, जैसे एंटी-टैंक माइंस और ब्लास्ट-कम-प्री-फ्रैगमेंटेड हाई एक्सप्लोसिव, लगाए जा सकते हैं।

चीन और रूस संग तनाव के बीच अंतरिक्ष में दुनिया के सबसे रहस्यमय स्पेस यान X-37B को भेज रहा अमेरिका, स्पेस वॉर की तैयारी

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिका अपने सबसे रहस्यमयी X-37B स्पेस प्लेन को फिर से अंतरिक्ष भेजने की तैयारी में है। रिपोर्ट के मुताबिक इस रहस्यमयी अंतरिक्ष यान को 21 अगस्त को लॉन्च किया जाएगा। इसे फ्लोरिडा स्थित नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर से स्पेसएक्स फाल्कन 9 रॉकेट के जरिए प्रक्षेपित किया जाएगा। यूएसएस स्पेस फोर्स के अधिकारियों ने सोमवार (28 जुलाई) को इसकी घोषणा की है। रोबोटिक X-37B यान, जिसे ऑर्बिटल टेस्ट व्हीकल भी कहा जाता है, उसका यह अब तक का आठवां मिशन होगा। इसलिए यूएस स्पेस फोर्स ने इस फ्लाइट को OTV-8 नाम दिया है। अपने पिछले मिशन में OTV-7, हाल ही में 434 दिनों के बाद पृथ्वी पर सफलतापूर्वक लौट आई थी, जिससे यह स्पेस फोर्स की सबसे लंबी स्पेस मिशन में से एक बन गई थी। स्पेस फोर्स के अधिकारियों ने फिलहाल यह नहीं बताया है कि ओटीवी-8 कितने समय तक चलेगा। एक्स-37बी अपने साथ करीब 8.8 मीटर का एक पेलोड लेकर जा रहा है, जिसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। लेकिन ये नासा के पुराने अंतरिक्ष शटल ऑर्बिटर का एक छोटा वैरिएंट जैसा दिखता है। स्पेस फोर्स के 28 जुलाई के बयान के मुताबिक ओटीवी-8 लेजर कम्युनिकेशन और एक क्वांटम जड़त्वीय सेंसर सहित कुछ नई तकनीकों का प्रदर्शन करने में मदद करेगा। यह मिशन "लोअर अर्थ ऑर्बिट (LEO) में बढ़ते वाणिज्यिक उपग्रह नेटवर्क" से जुड़े एक लेजर कम्युनिकेश प्रयोग पर भी केंद्रित होगा, जो संभवतः स्पेसएक्स के विशाल स्टारलिंक ब्रॉडबैंड नेटवर्क को संदर्भित करता है। नासा के इस मिशन के बारे में फिलहाल जो जानकारी मिल पाई है, उसके मुताबित मिशन में X-37B कई अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी का टेस्ट करेगा। इनमें सबसे अहम है क्वांटम इनर्शियल सेंसर, जिसे अब तक का सबसे उच्च-प्रदर्शन करने वाला क्वांटम नेविगेशन उपकरण बताया गया है। यह सेंसर GPS के बिना अंतरिक्ष में यान की स्थिति और दिशा निर्धारित करने में सक्षम है। इसके साथ-साथ, एक लेजर कम्युनिकेशन सिस्टम भी टेस्ट किया जाएगा जो डेटा को बेहद तेज और सुरक्षित तरीके से भेजने में मदद करेगा, खासकर LEO (Low Earth Orbit) में फैले वाणिज्यिक सैटेलाइट नेटवर्क जैसे Starlink से जमीन पर। अगर ये प्रोग्राम कामयाब होता है तो भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों को बड़ी राहत मिल सकती है। इससे चीन और रूस के खिलाफ अमेरिका को बहुत बड़ी बढ़त मिल जाएगी। आपको बता दें कि पारंपरिक GPS नेटवर्क पृथ्वी के बाहर जैसे चंद्रमा, मंगल या डीप स्पेस मिशनों में उपलब्ध नहीं होते, वहां यह क्वांटम सेंसर यानों को सटीक नेविगेशन में मदद करेगा। स्पेस फोर्स के प्रमुख चांस सॉल्टजैम ने इसे "ऑपेशनल रेजिलियेंस" की दिशा में एक बड़ा कदम करार दिया है। इस मिशन के फिर से शुरू होने का मतलब है कि इसे यूएस स्पेस फोर्स, एक अत्यंत लचीला और उपयोगी हथियार बना रही है, जो गुप्त अभियानों, तकनीकी परीक्षणों और भविष्य की अंतरिक्ष युद्ध रणनीतियों के लिए प्लेटफॉर्म बनता जा रहा है।

विराट कोहली के रिटायर होते ही शुभमन गिल निकले आगे... इस लिस्ट में रोहित शर्मा अभी भी आगे

एजेंसी लंदन

भारत और इंग्लैंड के बीच ओवल में चल रहे पांचवें और अंतिम टेस्ट मैच में भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कुछ खास प्रदर्शन नहीं किया। गिल ने पांचवें टेस्ट की पहले पारी में सिर्फ 21 रन बनाए। एक गलती के कारण वह रन लेने के लिए आगे बढ़े और गस एटकिंसन ने उन्हें रन आउट कर दिया। हालांकि इन 21 रनों की मदद से गिल ने विराट कोहली को पीछे छोड़ दिया है। शुभमन गिल अब WTC में भारत के तीसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। उनसे आगे ऋषभ पंत और रोहित शर्मा हैं। रोहित शर्मा ने भी टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। ओवल टेस्ट के पहले दिन शुभमन गिल 21 रन बनाकर आउट हो गए। WTC में उन्होंने विराट कोहली को पीछे छोड़ दिया है। गिल के अब वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप में 2636 रन हो चुके हैं। WTC में भारत के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ीः

2731 - ऋषभ पंत (67 पारियां)
2716 - रोहित शर्मा (69 पारियां)
2636 - शुभमन गिल (68 पारियां)
2617 - विराट कोहली (79 पारियां)
2348 - रविंद्र जडेजा (67 पारियां)

ओवल टेस्ट पर हरी पिच पर गेंद इधर-उधर हिल रही थी। गिल ने खुद को संभाला और अच्छा खेल रहे थे। लेकिन फिर उन्होंने एक गलती कर दी और अपना विकेट गंवा दिया। वाशिंगटन सुंदर और करुण नायर ने मिलकर 50 रनों की साझेदारी की और दिन का खेल खत्म किया। हालांकि दूसरा दिन शुरू होते ही टीम इंडिया के बाकी 4 विकेट सिर्फ 20 रन पर गिर गए और भारतीय टीम की पारी सिर्फ 224 रन पर सिमट गई। इंग्लैंड के लिए उनके तेज गेंदबाज गस एटकिंसन ने 5 विकेट हासिल किए। एटकिंसन इस सीरीज में अपना पहला मैच खेल रहे थे, लेकिन वे टीम इंडिया पर भारी पड़ गए।

बेन डकेट को जाकर कुछ कह रहे थे आकाश दीप, अगली बॉल पर अंग्रेज ने यूं `जलील' कर दिया

एजेंसी लंदन

भारत और इंग्लैंड के बीच पांचवां टेस्ट मैच 31 जुलाई से ओवल में खेला जा रहा है। मैच के दूसरे दिन बेन डकेट और आकाश दीप के बीच एक घटना हुई, जो इस वक्त चर्चा का विषय बनी हुई है। डकेट को गेंद डालने के बाद आकाश दीप कुछ कह रहे थे, जिसका बदला इंग्लिश बल्लेबाज ने अगली बॉल पर लिया। आखिर क्या है पूरा मामला, आइये जानते हैं। आकाश दीप ने बेन डकेट को मैच के दूसरे दिन एक गेंद डाली, जिसके बाद वह उनके पास गए और कुछ कहने लगे। हालांकि, दोनों के बीच क्या बातचीत हुई, इस बात की तो जानकारी नहीं है। लेकिन, अगली बॉल पर बेन डकेट ने बदला खूब लिया। उन्होंने आकाश दीप की गेंद पर विकेट के पीछे रिवर्स स्वीप खेलते हुए गजब का छक्का लगाया। इस तरह तेज गेंदबाज को छक्का लगाना किसी बेइज्जती से कम नहीं माना जाता है। 13वां ओवर भारत की तरफ से आकाश दीप डाल रहे थे। उनके ओवर की पांचवीं गेंद पर बेन डकेट स्ट्राइक पर थे। बेन डकेट रिवर्स स्वीप लगाते हुए एक और बड़ा शॉट खेलना चाहते थे। लेकिन, वह गेंद को टाइम नहीं कर पाए और गेंद उनके बल्ले का एज लेते हुए विकेटकीपर ध्रुव जुरेल के हाथों में चली गई। ऐसे में डकेट 43 रन बनाकर आउट हो गए। उन्होंने अपनी पारी में 5 चौके और 2 छक्के लगाए। इंग्लैंड के स्टेंड इन कप्तान ओली पोप ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया था। ऐसे में भारत ने पहली पारी में 224 रन बनाए। करुण नायर ने टीम इंडिया के लिए सर्वाधिक 57 रन बनाए जबकि इंग्लैंड के लिए गस एटकिंसन ने पंजा खोला।

सुनील गावस्कर ने किया इंग्लैंड को एक्सपोज, पिच को लेकर ऐसा बयान, बेन स्टोक्स गुस्से से लाल होंगे

एजेंसी लंदन

भारत और इंग्लैंड के बीच ओवल में खेले जा रहे पांचवें टेस्ट मैच के पहले दिन का खेल बारिश से बाधित रहा। भारत ने 64 ओवर में 6 विकेट खोकर 204 रन बनाए। अगले दिन टीम इंडिया आते ही 20 रन और बनाकर 224 रन पर ऑलआउट हो गई। पिच तेज गेंदबाजों के लिए मददगार है। पूर्व क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने पिच को लेकर इंग्लैंड के गेंदबाजी आक्रमण पर सवाल उठाए। उनका मानना है कि इंग्लैंड के पास अच्छे गेंदबाज नहीं हैं इसलिए उन्होंने ऐसी पिच बनाई है। पिच तेज गेंदबाजों के लिए काफी मददगार साबित हुई। सुनील गावस्कर ने पिच को लेकर अपनी राय रखी। उन्होंने इंग्लैंड के गेंदबाजी आक्रमण पर निशाना साधा। इंग्लैंड की टीम में बेन स्टोक्स, जोफ्रा आर्चर और ब्रायडन कार्स जैसे प्रमुख गेंदबाज नहीं खेल रहे हैं। स्टोक्स इस सीरीज में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। आर्चर और कार्स ने भी नियमित रूप से विकेट लिए हैं। गावस्कर ने कहा, 'उनके पास कोई अच्छी गेंदबाजी नहीं है, इसलिए उन्होंने ऐसी पिच बनाई है।' उन्होंने आगे कहा, 'स्टोक्स ने विकेट लिए, आर्चर ने विकेट लिए, कार्स ने विकेट लिए। अगर वे नहीं खेल रहे हैं, तो कौन विकेट लेगा? इसलिए उन्होंने ऐसी पिच बनाई है ताकि टंग और अन्य गेंदबाजों को मदद मिल सके।' ओवल की पिच पर घास थी, जिससे गेंदबाजों को काफी मदद मिल रही थी। खासकर बादल छाए रहने पर गेंद ज्यादा स्विंग हो रही थी। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज गस एटकिंसन ने अपने पहले ही मैच में दो महत्वपूर्ण विकेट लिए। वहीं उन्होंने भारत की पहली पारी में 5 विकेट हासिल किए। लेकिन जोश टंग और जेमी ओवरटन अपनी लाइन और लेंथ से भटके हुए दिखे। क्रिस वोक्स, जो पांचों टेस्ट मैच खेल रहे हैं फील्डिंग करते समय कंधे में चोट लगने के कारण मैदान से बाहर चले गए। उनका आगे खेलना संदिग्ध है। गावस्कर का मानना है कि इंग्लैंड ने कमजोर गेंदबाजी आक्रमण के कारण ऐसी पिच बनाई है। वे चाहते थे कि उनके गेंदबाज पिच से मदद लेकर विकेट निकाल सकें। हालांकि, भारतीय बल्लेबाजों ने भी मुश्किल परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन किया। करुण नायर की अर्धशतकीय पारी टीम के लिए महत्वपूर्ण रही। बारिश के कारण खेल बार-बार बाधित होने से बल्लेबाजों को परेशानी हुई। लेकिन उन्होंने धैर्य बनाए रखा और रन बनाते रहे।

बढ़ती जा रही है अंग्रेजों की हिम्मत... अब जो रूट ने लिया प्रसिद्ध कृष्णा से पंगा, अंपायर्स बीच में कूदे

एजेंसी लंदन

भारतीय क्रिकेट टीम और इंग्लैंड के बीच खेली जा रही टेस्ट सीरीज अब अपने आखिरी मुकाबले तक आ पहुंची है। इस सीरीज में दोनों टीमों के खिलाड़ियों के बीच जमकर विवाद हुआ। ऐसा ही कुछ 5वें टेस्ट में भी देखने को मिला। इंग्लैंड के दिग्गज बल्लेबाज जो रूट और भारतीय तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा के बीच तीखी बहस हुई। इंग्लैंड की पारी के 22वें ओवर में रूट और प्रसिद्ध के बीच कुछ कहासुनी हो गई। यह साफ नहीं है कि प्रसिद्ध ने इंग्लैंड के बल्लेबाज से क्या कहा, लेकिन बहस इतनी बढ़ गई कि अंपायरों को बीच-बचाव करना पड़ा। रूट वैसे तो अपने शांत स्वभाव के लिए जाने जाते हैं, लेकिन इस बार वो आपा खो बैठे। इस छोटी सी झड़प ने पहले से ही रोमांचक चल रहे क्रिकेट के दिन में एक और रंग भर दिया। जो रूट काफी भड़के हुए नजर आ रहे थे। इस बीच उन्होंने क्रीज पर वापस लौटने से पहले प्रसिद्ध कृष्णा को कुछ कहा भी। तभी अंपायर्स बीच बचाव करने लगे। इसी बीच टीम इंडिया के सीनियर बल्लेबाज केएल राहुल भी अंपायर्स से कुछ बातचीत करते हुए नजर आए। हालांकि ये मामला बहुत लंबा नहीं चला और खिलाड़ी अपनी अपनी जगह पर वापस लौट गए। पहले सेशन में इंग्लैंड ने भारत को सिर्फ 224 रनों पर आउट कर दिया और लंच तक 109/1 रन बना लिए थे। ज़ैक क्रॉउली ने 52 रनों की तेज पारी खेली और उन्हें बेन डकेट ने 43 रनों के साथ अच्छा साथ दिया। भारत के गेंदबाज रनों को रोकने के लिए संघर्ष करते दिखे और अक्सर उनकी लाइन और लेंथ सही नहीं रही। लंच के बाद भारत ने वापसी की। प्रसिद्ध कृष्णा ने क्रॉउली को 64 रनों पर रविंद्र जडेजा के हाथों कैच करा दिया। इसके तुरंत बाद ओली पोप को मोहम्मद सिराज ने आउट कर दिया।

विराट कोहली-रोहित शर्मा और एमएस धोनी के साथ क्रिकेट खेलेंगे लियोनेल मेसी

एजेंसी नई दिल्ली

अर्जेंटीना के लीजेंड फुटबॉलर लियोनल मेसी अगर हाथ में बल्ला या गेंद पकड़े क्रिकेट खेलते हुए नजर आएं तो आपको कैसा लगेगा? अगर हम कहें कि यह सच होने वाला है फिर? जी हां, दिग्गज फुटबॉलर लियोनल मेसी को आप आने वाले कुछ समय में क्रिकेट खेलते हुए देख सकते हो। टाइम्स ऑफ इंडिया के रिपोर्ट के मुताबिक, लियोनल मेसी दिसंबर में भारत का दौरा करने के लिए आएंगे। 13 से 15 दिसंबर के बीच मेसी मुंबई, कोलकाता और दिल्ली का दौरा करेंगे। टीओआई के मुताबिक, 14 दिसंबर को मेसी मुंबई के ऐतिहासिक क्रिकेट स्टेडियम वानखेड़े में होंगे और सेवन अ साइड एक क्रिकेट मैच खेलेंगे। मेसी के साथ फील्ड पर दिग्गज क्रिकेटर्स सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली, एमएस धोनी और रोहित शर्मा भी क्रिकेट खेलते हुए नजर आ सकते हैं। मुंबई क्रिकेट ऐसोसिएशन ने इस बात की पुष्टि की है। एमसीए के एक सूत्र ने टाइम्स ऑफ इंडिया को बताया, ' हां, मेसी 14 दिसंबर को वानखेड़े स्टेडियम में एक इवेंट के लिए आने के लिए तैयार हैं। इवेंट के आयोजकों ने इवेंट के लिए इजाजत भी ली है। उनको परमिशन भी मिल गई है। कुछ सुपरस्टार क्रिकेटर भी इस इवेंट का हिस्सा होंगे।' 38 सा के लियोनल मेसी इससे पहले सिर्फ एक बार भारत आए हैं। वह 2011 में वेनेजुएला के खिलाफ फ्रेंडली मैच के खेलने के लिए भारत आए थे। कोलकाता के सॉल्ट लेक स्टेडियम में वो मैच हुआ था। इसके अलावा मेसी के करियर की बात करें तो वह अब तक 8 बैलेन डी ओर जीत चुके हैं। वह 6 बार यूरोपियन गोल्डन शूज और 8 बार फीफा के बेस्ट प्लेयर रह चुके हैं। उन्होंने अपने करियर में कुल 45 टीम ट्रॉफी जीती हैं। मेसी अब अगले साल फीफा वर्ल्ड कप 2026 में भी भाग ले सकते हैं।

व्यापार

अमेरिका की नाराजगी और दांव पर 590000 करोड़... अगर ट्रंप ने भारत को रूसी तेल से अलग किया तो पुतिन क्या करेंगे

एजेंसी नई दिल्ली

भारत और रूस के बीच गहरे संबंध हैं। दोनों देशों में व्यापारिक रिश्ते भी बेहद मजबूत हैं। लेकिन, अमेरिका के नए टैरिफ और प्रतिबंधों से इन रिश्तों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। भारत को अपनी विदेश और आर्थिक नीति को लेकर मुश्किल फैसले लेने पड़ सकते हैं। पूरे मामले के केंद्र में भारत का रूसी तेल आयात है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर रूसी तेल के आयात को रोकने का दबाव डाला है। इसके चलते रूस को होने वाले अरबों डॉलर के राजस्व पर खतरा मंडरा रहा है। व्लादिमीर पुतिन अमेरिका की अगुवाई वाली एक प्रमुख तेल पाइपलाइन को बंद करके जवाबी कार्रवाई कर सकते हैं। इससे एक नया ग्लोबल सप्लाई संकट भी पैदा हो सकता है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक देश है। 2022 से यह रूस से तेल खरीदने वाला सबसे बड़ा देश बन गया है। भारत रोजाना 20 लाख बैरल तक तेल खरीदता है। यह ग्लोबल सप्लाई का 2% है। चीन और तुर्की भी रूस से तेल खरीदने वाले प्रमुख देश हैं। जेपी मॉर्गन के विश्लेषकों के अनुसार, भारत का रास्ता क्रेमलिन के लिए बहुत अहम है। अगर इसमें कोई बाधा आती है तो रूस कजाकिस्तान से सीपीसी पाइपलाइन को बंद करके जवाबी कार्रवाई कर सकता है। इस पाइपलाइन में अमेरिकी तेल कंपनियों शेवरॉन और एक्सॉन की बड़ी हिस्सेदारी है। यानी रूस के पास भी दबाव बनाने के तरीके हैं। ट्रंप ने धमकी दी है कि अगर मॉस्को 7-9 अगस्त तक यूक्रेन के साथ शांति समझौता नहीं करता है तो वह रूसी तेल खरीदने वाले देशों पर 100% तक का टैरिफ लगा देंगे। भारत से अमेरिका में आने वाले सभी सामानों पर 25% का टैरिफ शुक्रवार से लागू है न्यूज एजेंसी रॉयटर्स ने गुरुवार को बताया था कि ट्रंप की धमकी के बाद भारतीय सरकारी रिफाइनरियों ने इस सप्ताह रूसी तेल की खरीद रोक दी है। इसका मतलब साफ है। अगर भारत अमेरिकी दबाव के चलते रूसी तेल खरीदना बंद करता है तो इसका असर सिर्फ रूस पर नहीं पड़ेगा। अलबत्ता, ग्लोबल ऑयल मार्केट पर भी होगा। इसके चलते अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड की कीमतें 80 डॉलर प्रति बैरल के ऊपर जा सकती हैं। भारत और रूस के बीच हमेशा से मजबूत रिश्ते रहे हैं। हाल के दिनों में व्यापार संबंध में जोरदार इजाफा हुआ है। वित्त वर्ष 2024-25 में दोनों देशों के बीच व्यापार 68.7 अरब डॉलर (करीब 590000 करोड़ रुपये) तक पहुंच गया है। यह आंकड़ा महामारी से पहले के व्यापार का लगभग 5.8 गुना है। इस व्यापार में सबसे बड़ा हिस्सा कच्चे तेल का है। रूस अब भारत की कुल तेल जरूरतों का 40% तक पूरा करता है। यह रिश्ता सिर्फ व्यापार तक सीमित नहीं है। इसमें रक्षा और परमाणु ऊर्जा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र भी शामिल हैं। भारत अपने सैन्य उपकरणों का बड़ा हिस्सा रूस से खरीदता है। दोनों देशों के बीच परमाणु रिएक्टर बनाने के समझौते भी हैं। ट्रंप का दबाव इस मजबूत साझेदारी को कमजोर कर सकता है। इससे भारत की ऊर्जा सुरक्षा और रक्षा क्षमता दोनों प्रभावित हो सकते हैं। यह भारत के लिए यह मुश्किल स्थिति है। उसे एक तरफ जहां रूस के साथ अपने ऐतिहासिक और रणनीतिक संबंधों को बनाए रखना है। वहीं, दूसरी ओर अमेरिका के साथ अपने महत्वपूर्ण व्यापारिक रिश्तों को भी सुरक्षित रखना है। यह पूरा मामला अब भारत की 68 अरब डॉलर की दुविधा पर आकर टिक गया है। ट्रंप की नीतियों से यह सीधे तौर पर प्रभावित हो रहा है।

अनिल अंबानी के खिलाफ लुकआउट सर्कुलर, भारत के बाहर जाने पर रोक, क्या बढ़ने वाली है मुसीबत

एजेंसी नई दिल्ली

अनिल अंबानी की मुश्किलें बढ़ती दिख रही हैं। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अनिल धीरूभाई अंबानी ग्रुप (एडीएजी) के चेयरमैन के खिलाफ लुकआउट सर्कुलर (LoC) जारी किया है। इसका सीधा मतलब है कि उन पर देश छोड़ने पर रोक लगा दी गई है। ईडी ने उन्हें 17,000 करोड़ रुपये के लोन फ्रॉड और मनी लॉन्ड्रिंग मामले में 5 अगस्त को पूछताछ के लिए बुलाया था। यह ऐक्शन मुंबई और अन्य शहरों में एडीएजी की कंपनियों से जुड़े 35 से ज्यादा ठिकानों पर ईडी की ओर से की गई छापेमारी के बाद हुई है। ईडी की जांच मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत शुरू की गई है। जांच वित्तीय अनियमितताओं और लोन के गलत इस्तेमाल के एक जटिल नेटवर्क पर केंद्रित है। ईडी को शक है कि अनिल अंबानी ने लोन में गड़बड़ी की है। उन्होंने लोन को गलत तरीके से इस्तेमाल किया है। जांच एजेंसी ने इस मामले में कई जगह छापेमारी की है। ईडी ने अनिल अंबानी को पूछताछ के लिए भी बुलाया था। यह मामला 17,000 करोड़ रुपये के लोन फ्रॉड से जुड़ा है। 17,000 करोड़ रुपये के कर्ज धोखाधड़ी और मनी लॉन्ड्रिंग मामले में लुकआउट सर्कुलर (LoC) जारी करना और यात्रा प्रतिबंध लगाना, यह दर्शाता है कि जांच एजेंसी इस मामले को कितनी गंभीरता से ले रही है। अनिल अंबानी के खिलाफ एलओसी जारी करना सामान्य कदम नहीं है। यह तब किया जाता है जब जांच एजेंसी को लगता है कि आरोपी व्यक्ति देश छोड़कर भाग सकता है या जांच में सहयोग नहीं कर रहा है। इस कदम से सभी हवाई अड्डों और बंदरगाहों पर अलर्ट जारी हो गया है। इससे अनिल अंबानी की विदेश यात्राओं पर रोक लग गई है। यह एक साफ संकेत है कि ईडी इस मामले की तह तक जाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। वह अनलि अंबानी की उपस्थिति को सुनिश्चित करना चाहती है। अधिकारियों का कहना है कि यह जांच सीबीआई की ओर से दर्ज एफआईआर और सेबी जैसे अन्य नियामक निकायों की रिपोर्ट पर आधारित है। ईडी की जांच में लोन के गलत इस्तेमाल के आरोपों पर ध्यान दिया जा रहा है। विशेष रूप से, 2017 और 2019 के बीच यस बैंक की ओर से अंबानी की ग्रुप कंपनियों को दिए गए 3,000 करोड़ रुपये के लोन पर सवाल उठाए जा रहे हैं। जांचकर्ताओं ने कई अनियमितताओं की बात कही है। इसमें बैकडेटेड क्रेडिट अप्रूवल, उचित जांच की कमी और विभिन्न ग्रुपों और शेल कंपनियों को फंड का गलत इस्तेमाल शामिल है। एक और महत्वपूर्ण घटनाक्रम में ईडी एक फर्जी बैंक गारंटी रैकेट की भी जांच कर रहा है। इस जांच में सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SECI) को अनिल अंबानी ग्रुप से जुड़ी एक कंपनी की ओर से जमा की गई 68.2 करोड़ रुपये की एक फर्जी बैंक गारंटी का पता चला है। आरोप है कि यह फर्जी गारंटी एसबीआई की नकली ईमेल आईडी से भेजे गए जाली संचार के जरिए दी गई थी।

भारत को `डेड इकॉनमी' बताने वाले ट्रंप के मुंह पर तमाचा, एक दनि बाद ही आए ऐसे आंकड़े कि पीट लेंगे माथा

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के मुंह पर तमाचा जड़ने वाले आंकड़े आ गए हैं। ट्रंप ने भले ही भारत की अर्थव्यवस्था को 'डेड इकॉनमी' कहकर मजाक उड़ाया है। लेकिन, जुलाई के जीएसटी (गुड्स एंड सर्विस टैक्स) कलेक्शन के आंकड़े उनके दावे को पूरी तरह से खारिज करते हैं। जीएसटी कलेक्शन का आंकड़ा सिर्फ नंबर नहीं है। अलबत्ता, यह भारत की आर्थिक मजबूती और तेज ग्रोथ का साफ प्रमाण भी है। बीते रोज केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने भी लोकसभा में कहा था कि भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। कुछ ही वर्षों में भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है। जीएसटी कलेक्शन के आंकड़े सरकार की बात का समर्थन करते हैं। जुलाई में सकल जीएसटी संग्रह में 7.5 फीसदी का मजबूत इजाफा हुआ है। यह बढ़कर 1.96 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। जीएसटी कलेक्शन का यह आंकड़ा पिछले साल जुलाई के 1.82 लाख करोड़ रुपये और जून के 1.84 लाख करोड़ रुपये के संग्रह से काफी ज्यादा है। यह बढ़ोतरी मुख्य रूप से घरेलू राजस्व में 6.7 फीसदी की बढ़ोतरी के कारण हुई है, जो देश के भीतर कंजम्पशन और आर्थिक गतिविधियों में तेजी का संकेत है। इन आंकड़ों से साफ है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में मंदी नहीं, बल्कि मजबूत रफ्तार है। यह ट्रंप के 'डेड इकॉनमी' के दावे को सीधे तौर पर चुनौती देती है। ईवाई इंडिया में टैक्स पार्टनर सौरभ अग्रवाल ने भी इन आंकड़ों पर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि कुछ वैश्विक दबावों के बावजूद समग्र रुझान स्थिर उपभोग पैटर्न और अर्थव्यवस्था के निरंतर विकास को बताता है। इसके अलावा, जीएसटी रिफंड में 66.8% की महत्वपूर्ण ग्रोथ यह दर्शाती है कि सरकार की नीतियां कंपनियों के लिए सहायक वातावरण बना रही हैं। जीएसटी रिफंड सालाना आधार पर बढ़कर 27,147 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। समय पर रिफंड मिलने से कंपनियों के पास जरूरी कार्यशील पूंजी बनी रहती है। इससे व्यापार की रफ्तार बनी रहती है। ये सभी फैक्टर मिलकर भारत की एक ऐसी अर्थव्यवस्था की तस्वीर पेश करते हैं ।

आज कर के देखें ये उपाय, शनिदेव प्रसन्न होकर धन-दौलत और समस्त सुखों से भर देंगे आपकी झोली

न्याय के देवता शनिदेव को समर्पित होता है। इस दिन शनि महाराज की विशेष पूजा-अर्चना करने से जातक को शनि के अशुभ प्रभावों से राहत मिल सकती है और शनिदेव की विशेष कृपा भी प्राप्त होती है। वहीं, ज्योतिषशास्त्र में शनिवार के कुछ विशेष उपायों का वर्णन भी मिलता है जिन्हें विधिपूर्वक और पूरी श्रद्धा से करने से जातक को जीवन के दुखों से छुटकारा मिल सकता है और धन-दौलत की प्राप्ति भी होती है। आज हम आपको इनमें से कुछ ऐसे उपाय बताने जा रहे हैं जिन्हें करने से शनिदेव जल्दी प्रसन्न हो सकते हैं और जीवन से दुर्भाग्य व धन की कमी को दूर करते हैं। आइए विस्तार से जानें शनिवार के कुछ आसान उपाय... शनिवार के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नानादि करने के बाद साफ वस्त्र धारण करें और शनिदेव के मंदिर जाकर विधि-पूर्वक पूजा करें। साथ ही, उन्हें सरसों के तेल भी अर्पित करें। अब पीपल के वृक्ष के नीचे भी एक सरसों के तेल का दीपक जलाएं और कम से कम 7 बार पेड़ की परिक्रमा जरूर लगाएं। शनिवार के दिन इस उपाय को करने से शनिदेव जल्दी प्रसन्न होते हैं और उनकी विशेष कृपा भक्तों पर बनी रहती है। साथ ही, इससे जीवन से नकारात्मकता दूर होती है और सफलता में आने वाली बाधाएं भी धीरे-धीरे दूर होनी शुरू हो सकती हैं। अगर आप जीवन में आने वाले दुखों और बाधाओं से परेशान हैं, तो शनिवार को एक छोटा सा उपाय आजमा कर देख सकते हैं। इसके लिए शनिदेव की पूजा करने के साथ-साथ शनि चालीसा का पाठ भी अवश्य करना चाहिए। ऐसा करने से जातक को जरूरी कार्यों में आ रही बाधाओं से मुक्ति मिल सकती है और जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त होती है। साथ ही, मानसिक शांति भी मिलती है। वहीं, शनिवार को शाम के समय हनुमान चालीसा का पाठ भी जरूर करना चाहिए। ऐसा करने से जातक को भय से मुक्ति मिल सकती है और जीवन में खुशियां आने लगती हैं। शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए और धन से जुड़ी समस्याओं के लिए आप शनिवार को आक के फूल का एक उपाय कर सकते हैं। इसके लिए शनिवार के दिन आक के 7 ताजा पुष्प लेकर शनिदेव के मंदिर में अर्पित करने चाहिए। इस दौरान शनिदेव के मंत्र का जाप भी अवश्य जरूर करें। अब एक काले रंग के कपड़े में आक के फूल और जड़ को बांधकर अपने घर के मुख्य द्वार पर बांध लें। ऐसा करने से आपको शनि दोष से राहत मिल सकती है और आर्थिक तंगी से भी निजात मिल सकती है। शनिवार को आक के फूल का उपाय करने से शनि का बुरा प्रभाव कम होता है और धन-दौलत में वृद्धि होने लगती है। माना जाता है कि शनिवार के दिन शनिदेव को कुछ विशेष चीजों का भोग लगाना और उन्हें प्रसाद के रूप में ग्रहण करना बहुत फलदायी होता है। ऐसे में शनिवार को शनि महाराज को काले तिल का प्रसाद चढ़ाना चाहिए और उन्हें खाना भी चाहिए। इस उपाय को करने से जातक को सभी पापों से मुक्ति मिल सकती है और शनिदेव जल्दी प्रसन्न होते हैं। शनिवार के दिन काले तिल के इस उपाय से शनिदेव आपको जीवन में तरक्की दिला सकते हैं और कारोबार में भी सफलता के नए मार्ग खुलने लगते हैं।

इस प्रकार मिला भगवान विष्णु को सुदर्शन चक्र, शिव कृपा से होती है सभी की कामना पूर्ण

जब दैत्य अत्यंत प्रबल होकर धर्म का लोप करने लगे तब श्री हरि भगवान विष्णु ने कैलाश पर जाकर भगवान शिव की विधि पूर्वक आराधना की। वे हजारों नामों से शिव की स्तुति करते और प्रत्येक नाम पर एक कमल चढ़ाते थे। तब शिव ने विष्णु के भक्तिभाव की परीक्षा के लिए उनके लाये हुए एक हजार कमलों में से एक को छिपा लिया। अर्पण करते हुए फूल कम होने पर जब खोज की गई तो सारी पृथ्वी भ्रमण करके भी वह फूल न मिला तो विष्णु जी ने फूल की पूर्ति के लिए कमल सदृष एक नेत्र को निकालकर चढ़ा दिया। कथा विस्तार से- एक समय की बात है, दैत्य अत्यन्त प्रबल होकर लोगों को पीड़ा देने और धर्म का लोप करने लगे। उन महाबली और पराक्रमी दैत्यों से पीड़ित हो देवताओं ने देवरक्षक भगवान विष्णु से अपना सारा दुःख कहा। तब श्रीहरि कैलाश पर जाकर भगवान् शिव की विधिपूर्वक आराधना करने लगे। वे हजार नामों से शिव की स्तुति करते तथा प्रत्येक नाम पर एक कमल चढ़ाते थे जब शिव ने ली परीक्षा- भगवान शंकर ने श्रीहरि विष्णु के भक्ति भाव की परीक्षा करने के लिए उनके लाए हुए एक हजार कमलों में से एक को छिपा दिया। शिव की माया के कारण घटित हुई इस अद्भुत घटना का भगवान विष्णु को पता नहीं लगा। उन्होंने एक फूल कम जानकर उसकी खोज आरम्भ की। दृढ़तापूर्वक उत्तम व्रत का पालन करने वाले श्रीहरि ने भगवान शिव की प्रसन्नता के लिये उस एक फूल की प्राप्ति के उद्देश्य से सारी पृथ्वी पर भ्रमण किया, परंतु कहीं भी उन्हें वह फूल नहीं मिला। तब श्रीहरि विष्णु ने एक फूल की पूर्ति के लिये अपने कमलसदृश एक नेत्र को ही निकालकर चढ़ा दिया। यह देख सबका दुःख दूर करने वाले भगवान शंकर बड़े प्रसन्न हुए और वहीं उनके सामने प्रकट हो गये। सदाशिव ने प्रकट होकर कहा- 'मैं आप पर बहुत प्रसन्न हूं, इच्छानुसार वर मांगिए, मैं मनोवाञ्छित वस्तु दूंगा, मेरे लिये कुछ भी अदेय नहीं है।' श्री हरि विष्णु बोले, 'आपके सामने मुझे क्या कहना है, आप अन्तर्यामी हैं, अतः सब कुछ जानते हैं, तथापि आपके आदेश का गौरव रखने के लिये कहता हूं, दैत्यों ने सारे जगत को पीड़ित कर रखा है। सदाशिव, मेरे अपने अस्त्र-शस्त्र दैत्यों के वध में काम नहीं दे रहे, इसीलिये मैं आपकी शरण में आया हूं।' सूतजी कहते हैं- श्रीविष्णु का यह वचन सुनकर देवाधिदेव महेश्वर ने अपना सुदर्शन चक्र उन्हें दे दिया। उसको पाकर भगवान विष्णु ने उन समस्त प्रबल दैत्यों का उस सुदर्शन चक्र के सरलतापूर्वक संहार कर डाला।

द्रौपदी का वो शाप जिससे महाभारत में हुई भीम के पुत्र की मौत, लेकिन अर्जुन की जान बच गई

महाभारत कथा में एक पात्र हैं घटोत्कच जो काफी बलशाली थे। उनका विशालकाय शरीर था और उनके बल से महाभारत के युद्ध में हाहाकार मच गया था। भीम के पुत्र घटोत्कच जब पांडवों की तरफ से युद्ध में पहुंचे थे तो उन्होंने कौरव सेना के छक्के छुड़ा दिए थे। यही नहीं घटोत्कच को बर्बरीक का पिता माना जाता है, कलियुग में खाटू श्यामजी के तौर पर पूजे जाते हैं। लेकिन ऐसा क्या हुआ था कि घटोत्कच को द्रौपदी ने शाप दे दिया था, समझा जाता है कि इसी वजह से घटोत्कच की युद्ध भूमि में मृत्यु हुई थी। वह क्या शाप था और द्रौपदी ने भीम पुत्र को यह शाप क्यों दिया था। आइये विस्तार से जानते हैं। दरअसल पांडव दुर्योधन के लाक्षागृह की आग से बचकर जब निकले थे तो थके हारे एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे थे। तब भीम पहरेदारी कर रहे थे। उसी वन में हिडिंब नामक राक्षस रहता था जिसने पांडवों को पकड़ने के लिए अपनी बहन हिडिंबा को भेजा। हिडिंबा ने भीम को देखा तो वह आकर्षित हो उठी। उसने माया से सुंदर रूप धारण किया और भीम से बातें करने लगी। और उन्हें सभी बातें बता दी। इस बीच अपनी बहन को ढूंढते हुए हिडिंब वहां पहुंचा तो उसने भीम और हिडिंबा को साथ में बात करते हुए देखा। वह गुस्से से लाल-पीला होकर हिडिंबा को दंडित करने के लिए आगे बढ़ा तो भीम ने उसे मार दिया। कथा कहती है कि तब तक सभी पांडव वहां पहुंच गए थे। तब हिडिंबा ने कुंती से प्रार्थना की कि उसने भीम को पति के रूप में स्वीकार कर लिया है। उसकी याचना को देखकर युधिष्ठिर को दया आ गई और उन्होंने भीम को दिन में हिडिंबा के साथ रहने की अनुमति दे दी। इसके बाद दोनों का एक पुत्र हुआ जिसके सिर पर बाल (उत्कच) नहीं थे इसलिए उसका नाम फिर घटोत्कच रखा गया। राक्षसी पुत्र होने के चलते वह मायावी और काफी बलशाली था। बताते हैं कि यही घटोत्कच एक बार अपने पिता भीम से मिलने के लिए आया था। सभा में सभी पांडव बैठे थे और राजपाट लगा हुआ था। तब घटोत्कच ने अपनी मां हिडिंबा की आज्ञानुसार द्रौपदी का सम्मान नहीं किया। इससे द्रौपदी को अपमानित महसूस हुआ। द्रौपदी ने क्रोध में कहा कि वह पांडवों की पत्नी हैं। ब्राह्मण राजा की पुत्री हैं। इसलिए उनकी प्रतिष्ठा काफी ऊंची है। इसके बाद भी घटोत्कच ने भरी सभा में उनका अपमान किया। तब द्रौपदी ने घटोत्कच को शाप दिया कि वह अल्पायु होगा। इसके बाद महाभारत के युद्ध के दौरान जब घटोत्कच ने कौरव सेना में खलबली मचा दी थी तो किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था। तब दुर्योधन ने कर्ण पर घटोत्कच के ऊपर अमोघास्त्र छोड़ने का दबाव बनाया। ये अमोघास्त्र कर्ण ने अर्जुन के लिए बचा रखा था लेकिन दुर्योधन ने तर्क किया कि अगर घटोत्कच नहीं मरा तो वही अकेले पूरी कौरव सेना को खत्म कर देगा। इसलिए पहले उसका वध करना जरूरी है। इसके बाद कर्ण के अमोघास्त्र से घटोत्कच की जान गई। साथ ही अर्जुन की भी जान बच गई क्योंकि अमोघास्त्र को कोई नहीं रोक सकता था। माना जाता है कि द्रौपदी के इसी शाप से घटोत्कच की कम उम्र में मृत्यु हो गई।

आर्थिक राशिफल : अनफा योग और द्विद्वादश योग का उत्तम संयोग, शनिदेव भर-भरकर दिलाएंगे लाभ

मेष राशि कार्यक्षेत्र में आपको कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे मानसिक तनाव भी बढ़ेगा। लेकिन आप अपने मधुर व्यवहार और वाणी से माहौल को सामान्य बनाने में सफलता भी प्राप्त करेंगे। दूसरों की मदद के लिए भी आप हमेशा के प्रकार आगे आना पसंद करेंगे। नौकरी करने वालों पर काम का प्रेशर बढ़ सकता है। पारिवारिक मामले में जीवनसाथी के सेहत पर ध्यान देने की जरूरत पड़ सकती है।

वृषभ राशि आपका दिन शुभ रहने वाला है। कार्यक्षेत्र में कामकाज अच्छा चलेगा और लाभ कमाने के भी कई अवसर प्राप्त हो सकते हैं। दोपहर के समय आपको कोई सकारात्मक समाचार सुनने को मिलेगा, जिससे मन प्रसन्न रहेगा। परिवार के साथ भी समय अच्छा व्यतीत होगा। लेकिन आपको अपनी सेहत पर ध्यान देना होगा। रात में किसी कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं, जिससे सम्मान में बढ़ोतरी होगी।

मिथुन राशि आपको अपने पिता और कार्यक्षेत्र में उच्च अधिकारियों के सहयोग से किसी बहुमूल्य वस्तु या संपत्ति को प्राप्त करने की इच्छा पूरी हो सकती है। इसी के चलते पूरे दिन मन भी प्रसन्न रहेगा। कामकाज में आप ज्यादा व्यस्त रहेंगे लेकिन अनावश्यक चीजों पर खर्च करने से बचना होगा। कोई भी वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। आपकी मुलाकात किसी प्रिय और महान व्यक्ति से हो सकती है जिससे मनोबल बढ़ेगा। जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क राशि आपको भाग्य का पूरा साथ मिलेगा और व्यापार के मामले में अचानक से बड़ी मात्रा में धन की प्राप्ति हो सकती है। इसकी मदद से धन की कमी दूर होगी और आर्थिक स्थिति मजबूत होती जाएगी। व्यवसाय में बनने वाली योजनाओं को भी अब गति मिलेगा और समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। लेकिन कार्यक्षेत्र में आपको जल्दबाजी या भावनाओं में आकर फैसला लेने से बचना होगा, अन्यथा आगे नुकसान हो सकता है।

सिंह राशि आपको राजनीतिक क्षेत्र में अपने अपेक्षा से भी कई ज्यादा सफलता प्राप्त हो सकती है। प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र में सफलता के मार्ग खुलते जाएंगे, जिससे मानसिक तनाव कम होगा और मन प्रसन्न रहेगा। अगर कार्यस्थल पर कोई काम रुका हुआ था तो वह अब पूरा हो सकता है। पाचन से जुड़ी समस्या हो सकती है। ऐसे में अपने खानपान पर विशेष ध्यान जरूर दें।

कन्या राशि कार्यक्षेत्र में अपनी मेहनत और लगन से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ सकती है। लेकिन अगर आपके आसपास विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होती है तो ऐसे में अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना जरूरी होगा। अन्यथा बात ज्यादा बढ़ सकती है। शाम के समय आपको अचानक से धन लाभ हो सकता है। घर में चल रही परेशानियां भी अब दूर हो सकती हैं।

तुला राशि आपको शिक्षा या किसी प्रतियोगिता के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्राप्त हो सकती है। नौकरी करने वालों के लिए आय के नए स्रोत बनेंगे। आपके व्यवहार और बातचीत करने के तरीके से समाज में विशेष सम्मान प्राप्त होगा। कामकाज के सिलसिले में ज्यादा भागदौड़ करने के चलते आपकी सेहत में कुछ उतार-चढ़ाव आ सकता है। ऐसे में लापरवाही से बचें और सावधानी बरतें। आपको जीवनसाथी का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

वृश्चिक राशि आर्थिक मामलों में दिन अच्छा रहने वाला है। आपको लाभ कमाने के कई अवसर प्राप्त होंगे। इससे धन, सम्मान, यश, कीर्ति में भी वृद्धि होगी। अगर कार्यस्थल पर कोई काम रुका हुआ था तो अब वह पूरा हो सकता है और आपकी मुलाकात अपने प्रियजनों से भी हो सकती है। लेकिन कुछ परिस्थितियों में आपको वाणी पर संयम रखना होगा, अन्यथा विवाद हो सकता है।

धनु राशि सांसारिक सुख के साधनों में वृद्धि होगी और आप अपने घर की जरूरत का सामान खरीदने पर भी धन खर्च कर सकते हैं। कार्यस्थल पर किसी अधीनस्थ कर्मचारी या संबंधी के कारण तनाव बढ़ने की संभावना है। ऐसे में कोई जल्दबाजी में कोई फैसला न लें। साथ ही, पैसों के मामले में भी सावधानी बरतें, अन्यथा आपका धन कहीं अटक सकता है। अगर किसी कानूनी मामले में फंसे हैं तो अब सफलता प्राप्त हो सकती है।

मकर राशि व्यापार के मामले में समय अनुकूल रहेगा, जिससे आपको अच्छा लाभ प्राप्त हो सकता है। आर्थिक मामलों में भी दिन अच्छा रहेगा और पहले की अपेक्षा अब आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो जाएगी। व्यवसाय में परिवर्तन की योजना बना सकते हैं और प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने की संभावना बनी हुई है। लेकिन वाहन चलाते समय आपको सावधानी बरतनी होगी, अन्यथा वह अचानक खराब हो सकता है।

कुंभ राशि आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है और जीवनसाथी को अचानक शरीर से जुड़ी समस्या हो सकती है। इसी के चलते आपका ज्यादा समय भागदौड़ में भी निकल सकता है। किसी भी प्रकार के संपत्ति के क्रय विक्रय के मामले में आपको सावधानी बरतनी होगी। जल्दबाजी में निर्णय लेने से बड़ा नुकसान हो सकता है। हालांकि, शाम के समय तक स्थिति बेहतर होने लगेंगी।

मीन राशि बिजनेस में सफलता प्राप्त होगी, जिससे मन पूरा समय प्रसन्न रहेगा। कामकाज के सिलसिले में आप किसी दूर या पास की यात्रा पर भी जा सकते हैं। इस राशि के जातकों को मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा। शाम के समय किसी स्थान पर जाने के दौरान आपको कोई जरूरी जानकारी प्राप्त हो सकती है। माता-पिता की सलाह और आशीर्वाद लाभदायक सिद्ध होगी। वैवाहिक जीवन में खुशियां आएंगी।

माया किसे कहते हैं, व्यक्ति कैसे फंसा रहता है मायाजाल में

पैसों की वृद्धि करने में ही इंसान अपना सारा जीवन बिता देता है, इसी को 'माया' कहते हैं, इंसान मायाजाल में फंसा रहता है। माया का जाल यह है कि जहां दौलत बढ़ती है वहां चैन घटता है। एक अमीर आदमी के पास करोड़ों का कारोबार है, करोड़ों का कारोबार चलाने के बावजूद, उसे पैसों की तंगी हमेशा रहती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि अधिक पैसे कमाते-कमाते वह नए-नए कारोबार शुरू कर देता है। लेकिन, उसके जीवन का एक सच है कि वह चैन की नींद नहीं सो पाता, हर रात उसे चिंता घेरे रहती है, कल किसे कितना भुगतान करना है, बैंक की किश्त कैसे चुकानी है, उधारी कहां से भरनी है और नई योजनाओं के लिए धन कहां से आएगा। ये तनाव हर रात उसे घेर लेते हैं, कारण, वह जितना कमाता है, उससे कहीं ज्यादा खर्च करने और नए काम शुरू करने की लालसा में रहता है, इसलिए वह व्यकित दुःखी रहता है। दूसरी ओर एक व्यापारी है जो संतोष और समझदारी के साथ जीता है। उसके पास भी व्यापार, गाड़ी, मकान हैं, पर साथ ही वित्तीय स्थिरता और संतुलन भी है। उसकी नींद, उसका आत्मविश्वास और उसका संतुलन, यही उसकी असली दौलत है। पहला व्यक्ति अपने ही पैसों का गुलाम है। वह उस खजांची की तरह है, जो

बैंक में करोड़ों रुपयों का लेन-देन करता है, लेकिन उन्हें भोग नहीं सकता है। वह एक रखवाले की तरह अपना धन और संपत्ति का ध्यान रखता है, पर उनका इस्तेमाल नहीं कर सकता है। पैसों की वृद्धि करने में ही वह अपना सारा जीवन बिता देता है। वह अभागा, सचमुच समझदार नहीं है, इसी को 'माया' कहते हैं, वह मायाजाल में फंस गया है। हम अपने साथ वापसी का टिकट लेकर इस दुनिया में आए हैं। हम एक दिन अवश्य वापस जाने वाले हैं। उस टिकट पर हमारी वापसी की तारीख भी लिखी होती है। जब हम मृत्यु को प्राप्त होते हैं, तो अपने साथ कुछ नहीं ले जाते हैं। किसी ने सही ही कहा है, 'जब तुम मरोगे तो तुम्हारे साथ टूटी हुई सुई भी नहीं आएगी।' टूटी हुई सुई एक बेकार वस्तु है, अपने साथ बेकार वस्तु भी नहीं ले जा सकते हैं तो और क्या ले जा पाएंगे, कुछ भी नहीं। सारी जिंदगी अपनी समझकर जिस संपत्ति को बटोरा, वह आपके मौत के समय काम नहीं आती और उसे आप अपने साथ लें भी नहीं जा सकते। आपके साथ जो आता-जाता है, वह है जीवन में आपके द्वारा संचित पुण्य और पाप। इन्हीं के आधार पर ईश्वर यह तय करते हैं कि किस जीव का अगला जन्म किस घर में होगा, मां-बाप अमीर होंगे या गरीब, यह एक विचारणीय बात है।

भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत पूरे देश में चल रहे तहसील स्तरीय प्रशिक्षण

किसानों की आय दुगनी करना खेतों मे कीटनाशक का काम से कम उपयोग करना किसानो की प्राथमिकता -शर्मा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

किसानों की आय दुगनी कैसे हो सकती है खेतों में कीटनाशक का उपयोग कम से काम करके बेहतर उत्पादन बढ़ाने का कैसे कार्य किया जा सकता है। इस पर विस्तार पूर्वक जानकारी देने का काम भारतीय किसान संघ के मुख्य अतिथि संभागीय संगठन मंत्री दिनेश शर्मा मैं एक दिवसीय तहसील स्तरीय कार्यशाला को रानीपुर के माधव गौशाला अनुसंधान केंद्र मे संबोधित करते हुए कहा उन्होंने कहा कि ग्राम इकाइयों को किस तरह मजबूत किया जा सकता है भारतीय किसान संघ की महत्वत्ता ग्रामीण क्षेत्र में और किसानों के बीच में क्या होनी चाहिए किसानों को छोटी सी छोटी परेशानियों का निदान कैसे किया जा सकता है इस विषय पर विस्तार पूर्वक जानकारी उपलब्ध कराने का कारण उनके माध्यम से किया गया। कार्यक्रम का आयोजन भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत पूरे देश में चल रहे हैं।इसी तारतम्य में गुरुवार को तहसील स्तरीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में संगठन के पदा धिकारीयो ने अपनी रीति नीति के अनुसार केंद्र में विभिन्न प्रजाति के पौधारोपण किया। तहसील स्तरीय इस कार्यक्रम को संभागीय अध्यक्ष विनोद पाटिल, उपाध्यक्ष अशोक मालिया,जिला अध्यक्ष मनोज नवागे,संभागीय कोषाध्यक्ष राजेश चौधरी,प्रवक्ता शिव मोहन सिंह ने भी संबोधित करने का कार्य किया है। तहसील स्तरीय एकदिवसीय प्रशिक्षण शिविर में ग्रामीण क्षेत्र से लगभग 21 ग्राम समितियां के अध्यक्ष एवं पदाधिकारी उपस्थित हुए। प्रमुख रूप से तहसील अध्यक्ष शंभू लाल नरे,उपाध्यक्ष रमेश पटेल, बंसीलाल साहू,मदन चौहान,देवेंद्र राठौर,हेमंत यादव,घनश्याम यादव,बंटी सिनोटिया समेत सैकड़ो किसान उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मंच संचालन जिला मंत्री ध्रुव मालिया ने किया, प्रशिक्षण सिविल में ग्रामीण क्षेत्र से आए किसान एवं पदाधिकारी का आभार प्रदर्शन वरिष्ठ कार्यकर्ता मदन चौहान के माध्यम से करने का कार्य किया गया।

भैंसदेही में आदिवासी युवक की पिटाई मामला गरमाया आदिवासी संगठनों ने किया प्रदर्शन, शराब ठेकेदार और पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की मांग

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल के भैंसदेही में आदिवासी संगठनों ने आज (शुक्रवार) जोरदार धरना-प्रदर्शन किया। यह विरोध 24 जुलाई को आदिवासी युवक संदीप चिल्हाटे के साथ हुई कथित मारपीट के खिलाफ था। प्रदर्शनकारियों ने राज्यपाल के नाम ज्ञापन अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) को सौंपा। आरोप है कि शराब दुकान के कर्मचारियों ने संदीप के साथ मारपीट की और जातिसूचक गालियां दीं। स्थानीय पुलिस ने युवक को बिना कपड़ों के थाने लाकर पीटा। परिजनों से रिहाई के लिए 50 हजार रुपए की मांग की गई। इसमें से 30 हजार रुपए लेकर युवक को गंभीर अवस्था में छोड़ा गया। ज्ञापन में शराब ठेकेदारों और मारपीट में शामिल पुलिसकर्मियों पर सख्त कार्रवाई की मांग की गई है। मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार धाराओं में इजाफा करने की भी मांग है। दोषी पुलिसकर्मियों को अभियुक्त बनाने और गांवों में अवैध अंग्रेजी शराब की बिक्री पर रोक लगाने की मांग भी की गई। धरना प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहा। सुरक्षा के लिए एएसपी कमला जोशी के नेतृत्व में कई थानों का पुलिस बल तैनात किया गया था। हिंदू जागरण मंच के जिला सह संयोजक बंडू लिखितकर ने कहा कि यह हमला पूरे आदिवासी समाज के आत्मसम्मान पर है। पुलिस अधीक्षक बैतूल ने मामले की निष्पक्ष जांच का भरोसा दिलाया है। तीन आरोपियों के खिलाफ एससी-एसटी एक्ट सहित अन्य धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। संबंधित उपनिरीक्षक को लाइन अटैच किया गया है।

सांप ने काटा तो दो दिनों तक झांड़-फूंक करवाते रहे बैतूल में 50 वर्षीय महिला की मौत, समय पर अस्पताल न पहुंचाने से गई जान

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल जिले के चोपना थाना क्षेत्र के ग्राम शिवसागर में शुक्रवार को अंधविश्वास के कारण एक महिला की जान चली गई। घर में पलंग पर सो रही 50 वर्षीय संध्या मिस्त्री को जहरीले सांप ने डस लिया। परिजन उसे अस्पताल ले जाने की बजाय गांव के एक "भगत" के पास ले गए थे। दो दिन तक झाड़-फूंक और कथित देसी उपचार चलता रहा। हल्का सुधार दिखने पर महिला को घर लाया गया। लेकिन गुरुवार को उसकी तबीयत फिर बिगड़ गई और सीने में तेज दर्द शुरू हो गया। इसके बाद संध्या को घोड़ाडोंगरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। वहां प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें जिला अस्पताल बैतूल रेफर किया गया। शुक्रवार दोपहर 4 बजे के बीच महिला ने दम तोड़ दिया। विशेषज्ञों का कहना है कि सांप के काटने पर समय रहते चिकित्सा मिल जाती तो महिला की जान बचाई जा सकती थी। संध्या मिस्त्री के परिवार में पति मनिंद्र मिस्त्री, एक बेटा और एक बेटी हैं। महिला के शव का पोस्टमॉर्टम करके परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। स्वास्थ्य विभाग ने एक बार फिर लोगों से अपील की है कि सांप के काटने की स्थिति में झाड़-फूंक या देसी इलाज न करके तुरंत अस्पताल में चिकित्सकीय उपचार लेना चाहिए।

पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में जीते स्वर्ण, रजत, कांस्य पदक

आर.डी.पब्लिक स्कूल के शिक्षक ने राष्ट्रीय स्तर पर लहराया परचम

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान आर.डी. पब्लिक स्कूल बैतूल में स्कूल की डायरेक्टर ऋतु खण्डेलवाल के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ ही समग्र विकास के लिए खेलकूद सहित विभिन्न गतिविधियां संचालित की जा रहीं है। परिणामस्वरूप आर.डी.पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी देश के ख्यातिनाम तकनीकि,मेडीकल सहित अन्य उच्च शैक्षणिक संस्थाओं में प्रवेशित होने के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी उत्कृष्ठ सफलता हासिल कर रहे है। शिक्षा और खेल के क्षेत्र में आर.डी.पब्लिक स्कूल की उत्कृष्ठता के चलते यहां के शिक्षक भी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर स्कूल और जिले का नाम रौशन कर रहे है। राजस्थान के झालावाड़ा में आयोजित राष्ट्रीय पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में आर.डी. पब्लिक स्कूल बैतूल के विज्ञान शिक्षक और वेटलिफ्टर कौशिक मेहरा ने स्वर्ण,रजत और कांस्य पदक जीतकर सफलता का परचम लहराया।पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में राष्ट्रीय स्तर पर ऐतिहासिक सफलता हासिल करने वाले वेटलिफ्टर कौशिक मेहरा आर.डी.पब्लिक स्कूल बैतूल में विज्ञान के शिक्षक है। इस उत्कृष्ठ सफलता के लिए श्री मेहरा को आर.डी. पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर ऋतु खण्डेलवाल सहित शिक्षकों और विद्यार्थियों ने शुभकामनाएं दी है।

ढाई सौ से अधिक प्रतिभागियों को पीछे छोड़ा : राजस्थान के झालावाड़ में आयोजित राष्ट्रीय पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र,राजस्थान,उत्तरप्रदेश, झारखंड,पश्चिम बंगाल, हरियाणा,पंजाब राज्यों में ढाई सौ से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था। इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में आर.डी.पब्लिक स्कूल के युवा शिक्षक और वेटलिफ्टर कौशिक मेहरा ने इन प्रतियोगियों को पीछे छोड़ते हुए डेड लिफ्ट में 270 किलो वजन उठाकर स्वर्ण, बेंच प्रेस में 130 किलो और स्क्वाट में 195 किलो वनज उठाकर कांस्य व रजत पदक हासिल किया। अभी तक श्री मेहरा प्रदेश स्तर की दो प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक वजन उठाकर 6 गोल्ड मेडल जीत चुके है। उल्लेखनीय है कि आर.डी.पब्लिक स्कूल बैतूल के विज्ञान शिक्षक श्री मेहरा ने लगभग चार महीनें पहले इंदौर में आयोजित स्टेट पावर लिफ्टिंग चैपियनशिप में तीन गोल्ड मैडल हासिल कर ''स्ट्रांगेस्ट मैन ऑफ एमपी" का खिताब जीता था।

प्रेरणा का स्त्रोत है यह उपलब्धि- ऋतु खण्डेलवाल : आर.डी.पब्लिक स्कूल के विज्ञान शिक्षक कौशिक मेहरा द्वारा राष्ट्रीय पावर लिफ्टिंग चैपिंयनशिप में स्वर्ण, रजत और कांस्य पद हासिल करने पर स्कूल की डायरेक्टर ऋतु खण्डेलवाल ने इस उत्कृष्ठ सफलता के लिए उन्हें बधाई देकर कहा कि हमारे लिए यह गर्व का विषय है और विज्ञान शिक्षक कौशिक की उपलब्धि प्रेरणा का स्त्रोत है। डायरेक्टर श्रीमती खण्डेलवाल ने कहा कि विज्ञान जैसे गहन विषय को सहजता और सरलता से पढ़ाने वाले शिक्षक कौशिक मेहरा ने शक्ति के खेल पावर लिफ्टिंग में उत्कृष्ठ सफलता हासिल कर हमारे संस्थान के ''हर बच्चा और हर शिक्षक विशेष है'' के कॉन्सेप्ट को स्थापित किया है।

तेलंगाना एक्सप्रेस में कानपुर जा रहे युवक को हार्टअटैक आया, बैतूल में इमरजेंसी में ट्रेन रोक अस्पताल लाए

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

तेलंगाना एक्सप्रेस में यात्रा के दौरान 36 वर्षीय युवक की अचानक तबीयत बिगड़ने से मौत हो गई। उसकी पहचान कानपुर (उत्तर प्रदेश) निवासी शमसूद अली पिता मोहम्मद अली के रूप में हुई। शमसूद सिकंदराबाद में गुब्बारे बेचने का काम करता था। काम बंद होने के बाद वह अपने भांजे और एक पड़ोसी गांव के परिचित के साथ कानपुर लौट रहा था। जब ट्रेन नागपुर के आसपास थी, तभी शमसूद की तबीयत अचानक बिगड़ गई। वह अचेत हो गया। उसके साथ यात्रा कर रहे परिजनों और सहयात्रियों ने तत्काल रेलवे स्टाफ को सूचना दी। रेलवे कर्मचारियों ने बताया कि जहां भी चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध होगी, वहां ट्रेन रोकी जाएगी। सामान्यतः तेलंगाना एक्सप्रेस बैतूल स्टेशन पर नहीं रुकती है। लेकिन आपात स्थिति को देखते हुए ट्रेन को बैतूल स्टेशन पर रोका गया। शमसूद को तत्काल जिला अस्पताल लाया गया। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। परिजनों के अनुसार, युवक की मौत संभवतः दिल का दौरा पड़ने से हुई है। पुलिस ने मामले में आवश्यक कानूनी कार्रवाई की है। शुक्रवार को पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

मुलताई सिविल न्यायालय में न्यायिक अधिकारियों ने लगाए पौधे न्यायाधीश संदीप बोले- पौधे लगाने के साथ उनकी सुरक्षा भी जरूरी

दैनिक कारखाने का सफर। मुलताई

मुलताई तहसील विधिक सेवा समिति, सिविल न्यायालय मुलताई के तत्वावधान में शुक्रवार को "पंच-ज" अभियान के अंतर्गत वृहद पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह अभियान पर्यावरण, जल, जंगल, जानवर और जीवन के संरक्षण के लिए चलाया जा रहा है। कार्यक्रम में प्रथम जिला न्यायाधीश संदीप पाटिल, अपर जिला न्यायाधीश संजय भलावी, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी अभिजीत वास्कले, श्वेता गौतम, सरिता डाबर और देवेंद्र सिंह उपस्थित रहे। न्यायाधीश संदीप पाटिल ने पौधारोपण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, "प्रकृति को संतुलित बनाए रखने के लिए पेड़-पौधे लगाना ही पर्याप्त नहीं है। उन्हें संरक्षित करना और देखभाल करना भी हम सभी का नैतिक दायित्व है।" उन्होंने सभी वर्गों के लोगों से पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदारी की अपील की। कार्यक्रम में न्यायिक अधिकारियों ने विभिन्न प्रकार के पौधे रोपे और उनकी देखभाल की जिम्मेदारी भी ली। अपर जिला न्यायाधीश संजय भलावी ने कहा कि यह अभियान एक दिन का नहीं, बल्कि एक सतत प्रक्रिया है जिसे सभी को अपनाना चाहिए। न्यायिक मजिस्ट्रेट अभिजीत वास्कले, श्वेता गौतम और अन्य अधिकारियों ने भी पौधे लगाए। उन्होंने "हरियाली ही जीवन है" का संदेश देते हुए लोगों से अधिक से अधिक पौधारोपण करने की अपील की। तहसील विधिक सेवा समिति के इस प्रयास की सभी उपस्थित लोगों ने प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि न्यायपालिका द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में उठाया गया यह कदम समाज के लिए प्रेरणादायक है। कार्यक्रम के अंत में सभी न्यायिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने पौधों की सुरक्षा और देखभाल की जिम्मेदारी स्वयं लेने का संकल्प लिया। इस आयोजन से स्पष्ट हुआ कि न्यायिक व्यवस्था केवल न्याय देने तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों के निर्वहन में भी अग्रणी भूमिका निभा रही है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949